

**कहानी: विफलता अपने सिर, सफलता टीम के नाम — सतीश धवन और कलाम (एक सच्ची घटना)**

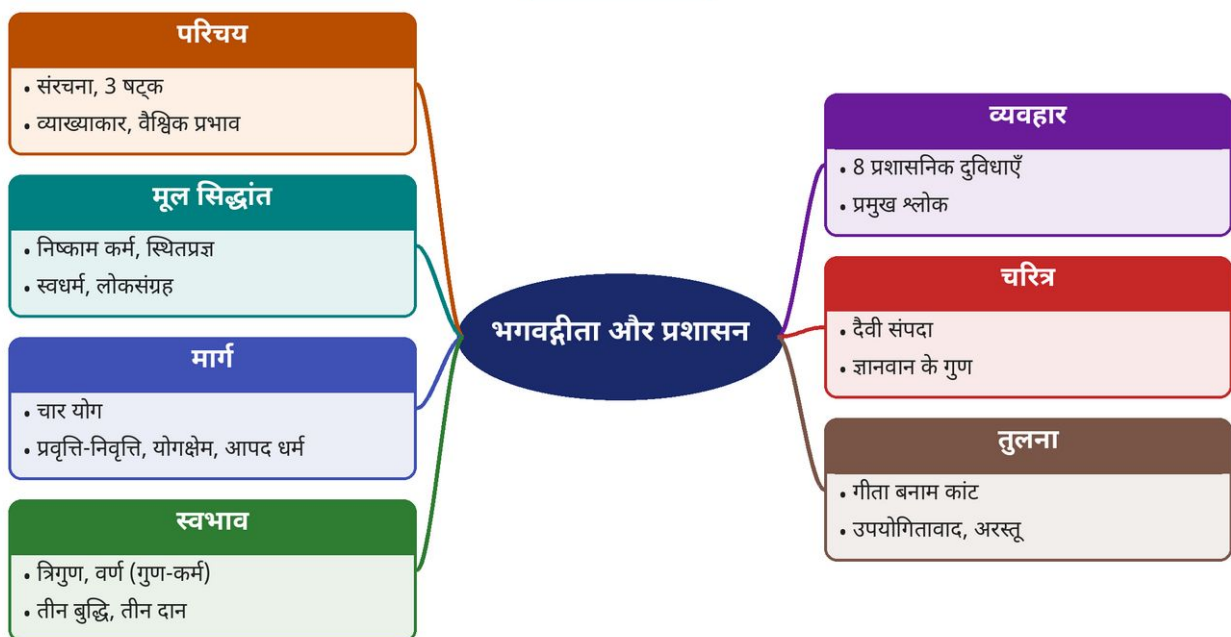
10 अगस्त 1979 की सुबह, श्रीहरिकोटा। भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह-प्रक्षेपण यान **SLV-3** उड़ान भरने वाला था। इस परियोजना के निदेशक थे एक युवा वैज्ञानिक — डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम। वर्षों की मेहनत, सैकड़ों वैज्ञानिकों का सपना और पूरे देश की उम्मीदें इस एक उड़ान पर टिकी थीं। रॉकेट ने उड़ान भरी, पर कुछ ही मिनटों में नियंत्रण-प्रणाली की गड़बड़ी के कारण वह बंगाल की खाड़ी में जा गिरा।

कलाम टूट चुके थे। विफलता की ज़िम्मेदारी उन्हीं की थी — वे ही परियोजना के प्रमुख थे। कुछ ही घंटों बाद प्रेस-वार्ता होनी थी, जहाँ देश-भर के पत्रकार कड़े सवाल पूछने वाले थे। तब इसरो के अध्यक्ष **प्रो. सतीश धवन** ने कलाम से कहा कि वे साथ चलें, और प्रेस के सामने स्वयं बोले — "हम विफल हुए हैं। पर मुझे अपनी टीम पर पूरा भरोसा है, अगली बार हम निश्चित रूप से सफल होंगे।" विफलता की पूरी ज़िम्मेदारी उन्होंने अपने सिर ले ली।

लगभग एक साल बाद, **18 जुलाई 1980** को SLV-3 ने रोहिणी उपग्रह को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया। पूरा देश गर्व से झूम उठा। इस बार जब प्रेस-वार्ता का समय आया, तो प्रो. धवन स्वयं पीछे हट गए और कलाम से कहा — "आज तुम बोलोगे।" सफलता का पूरा श्रेय उन्होंने अपनी टीम और उसके नेता को दे दिया।

कलाम ने वर्षों बाद इस घटना को अपने जीवन का सबसे बड़ा नेतृत्व-पाठ बताया — "जब विफलता आई, तो नेता ने उसे अपने ऊपर लिया; जब सफलता आई, तो उसने उसे अपनी टीम को दे दिया।" यह घटना गीता की तीन बड़ी शिक्षाओं का जीवंत रूप है — फल की आसक्ति के बिना कर्म (**निष्काम कर्म**), विफलता में भी विचलित न होने वाला मन (**स्थितप्रज्ञ**), और ऐसा श्रेष्ठ आचरण जिसे पीढ़ियाँ अपनाएँ (**लोकसंग्रह**)। यही वह भगवद्गीता है, जिसे यह अध्याय एक प्रशासक की आँखों से पढ़ता है।

**इस कहानी से सीख:** सच्चा नेतृत्व फल का श्रेय लेने में नहीं, ज़िम्मेदारी उठाने में दिखता है। सफलता-विफलता में समभाव (समत्व), टीम के प्रति समर्पण और फल की आसक्ति से मुक्ति — यही गीता का प्रशासनिक संदेश है।

**अध्याय 04 — एक नज़र में**

चित्र 4.1: अध्याय 04 — एक नज़र में

## कहानी: अध्याय की यात्रा — "कुरुक्षेत्र से कलेक्ट्रेट तक: SDM पार्थ और केशव काका"

(यह एक काल्पनिक कहानी है। इसके हर पड़ाव में इस अध्याय का एक भाग छिपा है।)

**पार्थ की पहली पोस्टिंग नागौर ज़िले के एक उपखंड में SDM के रूप में हुई।** जाने से पहले वह अपने गाँव गया, जहाँ उसके बचपन के संस्कृत शिक्षक **केशव काका** रहते थे — सेवानिवृत्त, सफ़ेद धोती, हाथ में हमेशा एक पुरानी गीता। विदा करते समय काका ने वही गीता पार्थ के बैग में रख दी और कहा — "बेटा, जब भी कोई उलझन आए, मुझे फ़ोन करना। जवाब इसी किताब में होगा।" पार्थ मुस्कुराया — उसे लगा, सरकारी दफ़्तर में यह पुरानी किताब क्या काम आएगी?

**पहला पड़ाव — किताब का परिचय:** पहली ही रात फ़ोन पर काका ने बताया कि गीता महाभारत के भीष्म पर्व का हिस्सा है, 18 अध्याय और 700 श्लोक; शंकराचार्य से लेकर तिलक, गांधी और विनोबा तक ने इसे अपनी-अपनी तरह पढ़ा, और विदेशों में भी इसने वैज्ञानिकों और नेताओं को प्रभावित किया। (खंड 1)

**दूसरा पड़ाव — अर्जुन की दुविधा:** दूसरे ही हफ़्ते पार्थ को पता चला कि अवैध खनन करने वालों में उसके एक दूर के रिश्तेदार भी हैं। वह उलझ गया। काका बोले — "यही तो अर्जुन की दुविधा थी — सामने अपने ही लोग, पर कर्तव्य स्पष्ट।" (खंड 2)

**तीसरा पड़ाव — फल की चिंता:** जब ऊपर से "रैंकिंग" सुधारने का दबाव आया, तो काका ने "कर्मण्येवाधिकारस्ते" सुनाया — "काम सच्चा करो, रैंकिंग अपने आप सुधरेगी; और न भी सुधरे, तो भी काम सच्चा ही रहे।" (खंड 3)

**चौथा पड़ाव — शांत मन:** एक दिन आक्रोशित भीड़ ने दफ़्तर घेर लिया। पार्थ ने गुस्से की जगह धैर्य से बात की — यह **स्थितप्रज्ञ** का पहला अभ्यास था। (खंड 4)

**पाँचवाँ पड़ाव — अपना कर्तव्य, अपना धर्म:** एक नेता ने कहा "पुलिस का काम भी आप ही देख लो" और एक ठेकेदार ने "थोड़ा लचीला बनिए" कहा। काका बोले — "जो तुम्हारा कर्तव्य है वही तुम्हारा **स्वधर्म** है; दूसरे का रास्ता, चाहे जितना आसान लगे, भयावह है।" (खंड 5)

**छठा पड़ाव — दूसरे देखते हैं:** पार्थ ने देखा कि जब वह समय पर दफ़्तर आने लगा, तो पूरा स्टाफ़ समय पर आने लगा। काका हँसे — "यद्यदाचरति श्रेष्ठः — बड़ा जो करता है, दुनिया वही करती है; यही **लोकसंग्रह** है।" (खंड 6)

**सातवाँ पड़ाव — चार रास्ते, तीन गुण:** काका ने समझाया कि कोई ज्ञान से, कोई कर्म से, कोई भक्ति से और कोई ध्यान से आगे बढ़ता है (**चार योग**); संकट में नियम से आगे सोचना पड़े तो वह **आपद धर्म** है; और हर व्यक्ति में **सत्त्व, रजस, तमस** — तीनों गुण होते हैं, बस संतुलन चाहिए। (खंड 7 से 10)

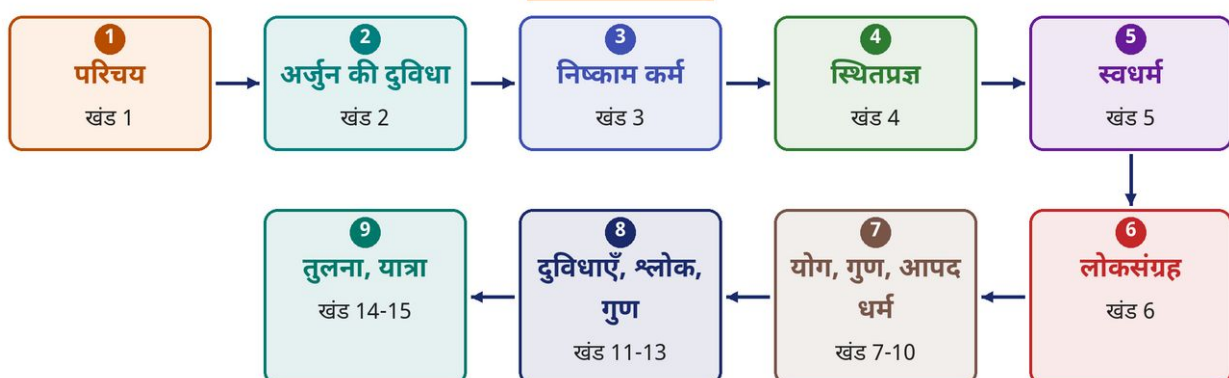
**आठवाँ पड़ाव — दुविधाओं की किताब:** साल के अंत तक पार्थ के पास आठ बड़ी दुविधाएँ आ चुकी थीं, और हर बार उसे गीता में कोई न कोई श्लोक रास्ता दिखाता मिला। उसने उन श्लोकों की एक छोटी डायरी बना ली, और उसमें **दैवी संपदा** के गुण — निर्भयता, सत्य, विनम्रता — मोटे अक्षरों में लिखे। (खंड 11 से 13)

**नौवाँ पड़ाव — पूरब और पश्चिम:** प्रशिक्षण अकादमी में पार्थ ने एक व्याख्यान में जर्मन दार्शनिक कांट को सुना और पाया कि "कर्तव्य के लिए कर्तव्य" की बात गीता भी करती है — भले रास्ते अलग हों। (खंड 14 और 15)

साल भर बाद पार्थ ने काका को फ़ोन किया — "काका, आप सही थे। यह पुरानी किताब मेरी सबसे नई नियमावली निकली।" काका ने बस इतना कहा — "किताब पुरानी है बेटा, सवाल हमेशा नए रहेंगे।" आइए, अब हम भी पार्थ की तरह यह यात्रा शुरू करते हैं।

**🔑 इस कहानी से सीख:** यह अध्याय गीता के मूल सिद्धांतों (निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञ, स्वधर्म, लोकसंग्रह), मार्गों (चार योग, आपद धर्म), स्वभाव-विज्ञान (त्रिगुण), व्यावहारिक दुविधाओं और तुलनात्मक अध्ययन की क्रम से यात्रा कराता है।

### पार्थ की यात्रा — अध्याय के नौ पड़ाव



चित्र 4.2: पार्थ की यात्रा — अध्याय के नौ पड़ाव

#### अध्याय विषय-सूची

|                                                       |                                                            |
|-------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------|
| 1 भगवद्गीता — परिचय, महत्व एवं प्रभाव                 | 9 वर्ण व्यवस्था (Varna Vyavastha) — गुण और कर्म पर आधारित  |
| 2 अर्जुन की नैतिक दुविधा (अध्याय 1: अर्जुन विषाद योग) | 10 त्रिगुण (Three Gunas) — सत्त्व, रजस, तमस                |
| 3 निष्काम कर्मयोग (Nishkama Karma) — फल की इच्छा      | 11 प्रशासनिक दुविधाओं का गीता से समाधान (8 नैतिक दुविधाएँ) |

|                                                           |                                                          |
|-----------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------|
| के बिना कर्तव्य                                           |                                                          |
| 4 स्थितप्रज्ञ (Sthita Pragya) — स्थिर बुद्धि वाला प्रशासक | 12 प्रमुख श्लोक और प्रशासनिक अनुप्रयोग                   |
| 5 स्वधर्म और परधर्म (Swadharma and Paradharma)            | 13 दैवी संपदा (अध्याय 16) और ज्ञानवान के गुण (अध्याय 13) |
| 6 लोकसंग्रह (Lok Sangraha) — विश्व-कल्याण                 | 14 भगवद्गीता और कांट (Kant) की नैतिकता — तुलना           |
| 7 गीता के चार योग — मुक्ति के मार्ग                       | 15 भगवद्गीता — ऐतिहासिक यात्रा और प्रशासनिक प्रासंगिकता  |
| 8 प्रवृत्ति-निवृत्ति, योगक्षेम और आपद धर्म                |                                                          |

## 1. भगवद्गीता — परिचय, महत्व एवं प्रभाव

भगवद्गीता एक 'संकट' से उत्पन्न दर्शन है, जो आज एक प्रशासक के दैनिक जीवन के संकटों और दुविधाओं से लड़ने में मदद करता है। यह केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक प्रशासनिक नियमावली की तरह भी पढ़ी जाती है।

### आसान परिभाषा: भगवद्गीता

**परिभाषा:** महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग, जिसमें कुरुक्षेत्र युद्ध शुरू होने से ठीक पहले भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश शामिल है — यह 18 अध्यायों व लगभग 700 श्लोकों में विभाजित है, और प्रस्थानत्रयी (ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, भगवद्गीता — हिंदू दर्शन के तीन मूल आधार-ग्रंथ) का एक हिस्सा मानी जाती है।

**आसान भाषा में:** जैसे किसी बड़े फैसले से पहले हम किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेते हैं, ठीक वैसे ही अर्जुन अपने सारथी और मार्गदर्शक कृष्ण से सलाह लेता है — और यही संवाद गीता के रूप में हमारे सामने है। **उदाहरण:** एक प्रशासक जब किसी कठिन नैतिक दुविधा में फँसता है — जैसे कानून का पालन करें या मानवीय संवेदना दिखाएँ — तो गीता के सिद्धांत (जैसे निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञ) उसे निर्णय लेने की एक स्पष्ट दिशा देते हैं।

## गीता की संरचना — 18 अध्याय, तीन षट्क

### भगवद्गीता — 700 श्लोक

#### कर्म षट्क (अध्याय 1-6)

कर्तव्य, निष्काम कर्म, स्थितप्रज्ञ, ध्यान

#### भक्ति षट्क (अध्याय 7-12)

ईश्वर-स्वरूप, समर्पण, विश्वरूप, भक्त के लक्षण

#### ज्ञान षट्क (अध्याय 13-18)

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, त्रिगुण, दैवी संपदा, मोक्ष

चित्र 4.3: गीता की संरचना — 18 अध्याय, तीन षट्क

**गीता का दार्शनिक आधार:** गीता का दार्शनिक सार मुख्य रूप से **उपनिषदों** से आया है, और इसमें **सांख्य** (वह दर्शन जो संसार को दो मूल तत्वों — जड़ 'प्रकृति' और चेतन 'पुरुष' — से बना मानता है और सत्त्व-रजस-तमस नाम के तीन गुणों का विचार देता है) तथा **योग** (महर्षि पतंजलि से जुड़ा वह दर्शन जो मन और इंद्रियों को अनुशासन में रखने की विधि सिखाता है) दर्शन के तत्वों का सुंदर समन्वय है। इसीलिए इसे "उपनिषदों का सार" भी कहा जाता है। गीता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह **कर्म के त्याग की नहीं, बल्कि कर्म में त्याग** की शिक्षा देती है — यानी सब कुछ छोड़कर संन्यास लेने की नहीं, बल्कि कर्म करते हुए स्वार्थ और फल की आसक्ति छोड़ने की बात करती है।

**गीता की नैतिकता — न भोगवादी, न तपस्वी:** गीता न तो सुख का अंधा पीछा करने (भोगवाद — Hedonism) का समर्थन करती है, न इच्छाओं के कठोर दमन (तपस्वीवाद — Asceticism) का। यह इच्छाओं की **संयमित पूर्ति** का मार्ग बताती है, और व्यक्तिगत कल्याण के साथ-साथ सामाजिक कल्याण को भी बढ़ावा देती है।

### 1.1 गीता की संरचना — एक नज़र में

| तथ्य              | विवरण                                                         |
|-------------------|---------------------------------------------------------------|
| ग्रंथ का स्थान    | प्रस्थानत्रयी में से एक — ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, भगवद्गीता।    |
| महाभारत में स्थान | भीष्म पर्व का भाग (महाभारत के 18 पर्वों में से एक)।           |
| संरचना            | 18 अध्याय, लगभग 700 श्लोक।                                    |
| प्रथम अध्याय      | अर्जुन विषाद योग — अर्जुन की दुविधा (नीचे खंड 2 में विस्तार)। |
| द्वितीय अध्याय    | सांख्य योग — स्थितप्रज्ञ की परिभाषा दी गई है।                 |
| तृतीय अध्याय      | कर्म योग — लोकसंग्रह की अवधारणा का वर्णन।                     |
| चतुर्थ अध्याय     | ज्ञान योग — गुण व कर्म के आधार पर चार वर्णों का परिचय।        |
| बारहवाँ अध्याय    | भक्ति योग — अनन्य भक्ति का वर्णन।                             |

| तथ्य            | विवरण                                                         |
|-----------------|---------------------------------------------------------------|
| चौदहवाँ अध्याय  | गुणत्रय विभाग योग — सत्त्व, रजस, तमस का विवेचन।               |
| अठारहवाँ अध्याय | चार वर्णों का विस्तृत वर्णन एवं निष्काम कर्म के सार का समापन। |

### ☀ प्रसिद्ध श्लोक — गीता का केंद्रीय संदेश

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥" — अर्थात्, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म का उत्थान होता है, तब-तब मैं स्वयं को प्रकट करता हूँ (अध्याय 4, श्लोक 7)। यह श्लोक बताता है कि गीता का मूल संदेश ही अन्याय के विरुद्ध खड़े होना है — एक प्रशासक के लिए यह प्रेरणा है कि भ्रष्टाचार व अन्याय के खिलाफ कार्रवाई करना उसका कर्तव्य-धर्म है।

## 1.2 भारतीय नैतिक परंपरा में गीता — मूल्य और सुशासन के सूत्र

भारतीय (हिंदू) नैतिक परंपरा के प्रमुख मूल्य हैं — **धर्म** (कर्तव्य-नैतिकता), **कर्म** (कारण और परिणाम का नियम), **मोक्ष** (मुक्ति), **संसार** (जन्म-मृत्यु का चक्र), **अहिंसा**, **वसुधैव कुटुम्बकम्** (पूरी पृथ्वी एक परिवार), **निष्काम कर्म** (पुरस्कार की चाह के बिना कर्तव्य) और **सत्यमेव जयते** (सत्य की ही विजय)। गीता इन सभी मूल्यों को एक सूत्र में पिरोती है। सुशासन के संदर्भ में गीता **नेतृत्व**, **कर्तव्यनिष्ठा** और **आत्म-साक्षात्कार** के अनेक सूत्र देती है, जिन्हें आज के संदर्भ में नए ढंग से समझा जाता है। विशेष रूप से गीता का "**अधिष्ठान**" (गीता 18.14 में बताए गए कर्म के पाँच कारणों में पहला — यानी वह आधार या ढाँचा जिस पर कोई काम टिका होता है) का विचार शासन में ज़िम्मेदारी और स्थिरता पर बल देता है — यानी हर कर्म का एक ठोस आधार (संस्था, नियम, व्यवस्था) होना चाहिए।

**नैतिक सिद्धांत के रूप में गीता:** मानक नीतिशास्त्र (Normative Ethics) — जो यह बताता है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं — के चार प्रमुख सिद्धांत माने जाते हैं: प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू का **सद्गुण-नीतिशास्त्र**, जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट का **कर्तव्य-नीतिशास्त्र**, ब्रिटिश विचारक जॉन स्टुअर्ट मिल का **परिणामवाद (उपयोगितावाद)** और भगवद्गीता का **निष्काम कर्मयोग**। यानी गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि विश्व के चार बड़े नैतिक सिद्धांतों में से एक का स्रोत है।

### मानक नीतिशास्त्र के चार प्रमुख सिद्धांत

क्या करना चाहिए?

**सद्गुण-नीतिशास्त्र**

अरस्तू — अच्छा चरित्र

**कर्तव्य-नीतिशास्त्र**

कांट — कर्तव्य के लिए कर्तव्य

**परिणामवाद**

मिल — अधिकतम लोगों का सुख

**निष्काम कर्मयोग**

गीता — आसक्ति-रहित कर्तव्य

चित्र 4.4: मानक नीतिशास्त्र के चार प्रमुख सिद्धांत

## 1.3 गीता के प्रमुख व्याख्याकार

| विचारक / व्याख्याकार                                     | गीता की व्याख्या                                          | प्रमुख योग                     |
|----------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------|--------------------------------|
| आदि शंकराचार्य                                           | मोक्ष के लिए ज्ञान पर बल (अद्वैत वेदांत)।                 | ज्ञान योग                      |
| रामानुजाचार्य                                            | भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण (विशिष्टाद्वैत)।              | भक्ति योग                      |
| बाल गंगाधर तिलक ('गीता रहस्य', 1915 — मांडले जेल, बर्मा) | कर्म ही मोक्ष का मार्ग है।                                | कर्म योग                       |
| महात्मा गांधी                                            | अनासक्ति योग (Anasakti Yoga) — फल की चिंता किए बिना कर्म। | निष्काम कर्म                   |
| स्वामी विवेकानंद                                         | मानव-सेवा ही ईश्वर-सेवा है।                               | कर्म + भक्ति + ज्ञान का समन्वय |

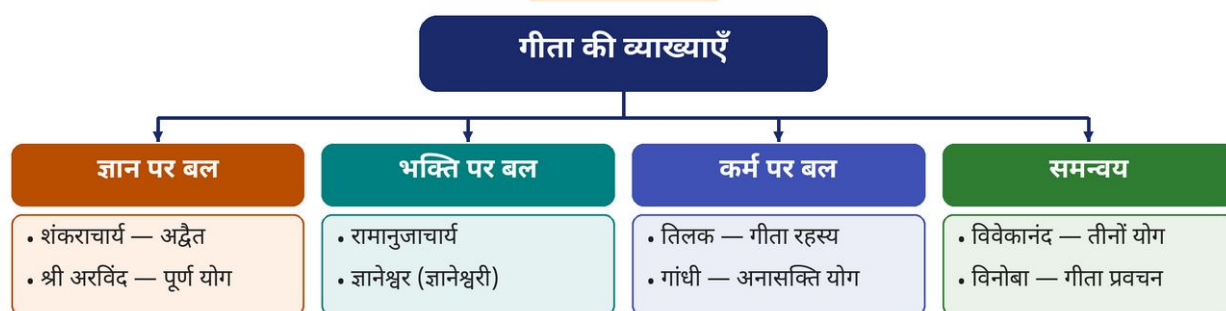
उल्लेखनीय है कि बाल गंगाधर तिलक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता रहस्य' वर्ष 1908-1914 के बीच मांडले (बर्मा) की जेल में अपनी कैद के दौरान लिखी थी, जो वर्ष 1915 में प्रकाशित हुई।

### ☀ जेल की कोठरियों में लिखी गई गीता की व्याख्याएँ

गीता की कई महान व्याख्याएँ कठिन परिस्थितियों में जन्मीं। तिलक की "गीता रहस्य" मांडले जेल में लिखी गई। इसी तरह **आचार्य विनोबा भावे** ने 1932 में **धुळे (महाराष्ट्र) की जेल** में साथी कैदियों के सामने हर रविवार गीता पर प्रवचन दिए। उनके साथी **साने गुरुजी** ने इन प्रवचनों को लिख लिया, जो बाद में "**गीता प्रवचन**" नाम से प्रकाशित हुए और अनेक भाषाओं में अनुवादित होकर करोड़ों लोगों तक पहुँचे।

**महात्मा गांधी** ने गीता का गुजराती अनुवाद और टीका "**अनासक्ति योग**" (1929) के नाम से लिखी, और गीता को अपनी "माता" कहा। तेरहवीं शताब्दी में संत **ज्ञानेश्वर** ने गीता की मराठी व्याख्या "**ज्ञानेश्वरी**" (1290 ई., नेवासा) लिखी, जिससे यह ज्ञान संस्कृत न जानने वाले आम लोगों तक पहुँचा। **श्री अरविंद** की "एसेज़ ऑन द गीता" (Essays on the Gita) ने इसे आध्यात्मिक-राष्ट्रवादी दृष्टि दी — यानी उन्होंने गीता को केवल व्यक्तिगत मुक्ति का नहीं, बल्कि राष्ट्र के जागरण और कर्तव्य-भावना का ग्रंथ भी बताया। (श्री अरविंद पहले स्वतंत्रता-सेनानी थे और बाद में पुडुचेरी में योगी-दार्शनिक के रूप में रहे।)

## गीता के प्रमुख व्याख्याकार — किसने किस योग पर बल दिया



चित्र 4.5: गीता के प्रमुख व्याख्याकार — किसने किस योग पर बल दिया

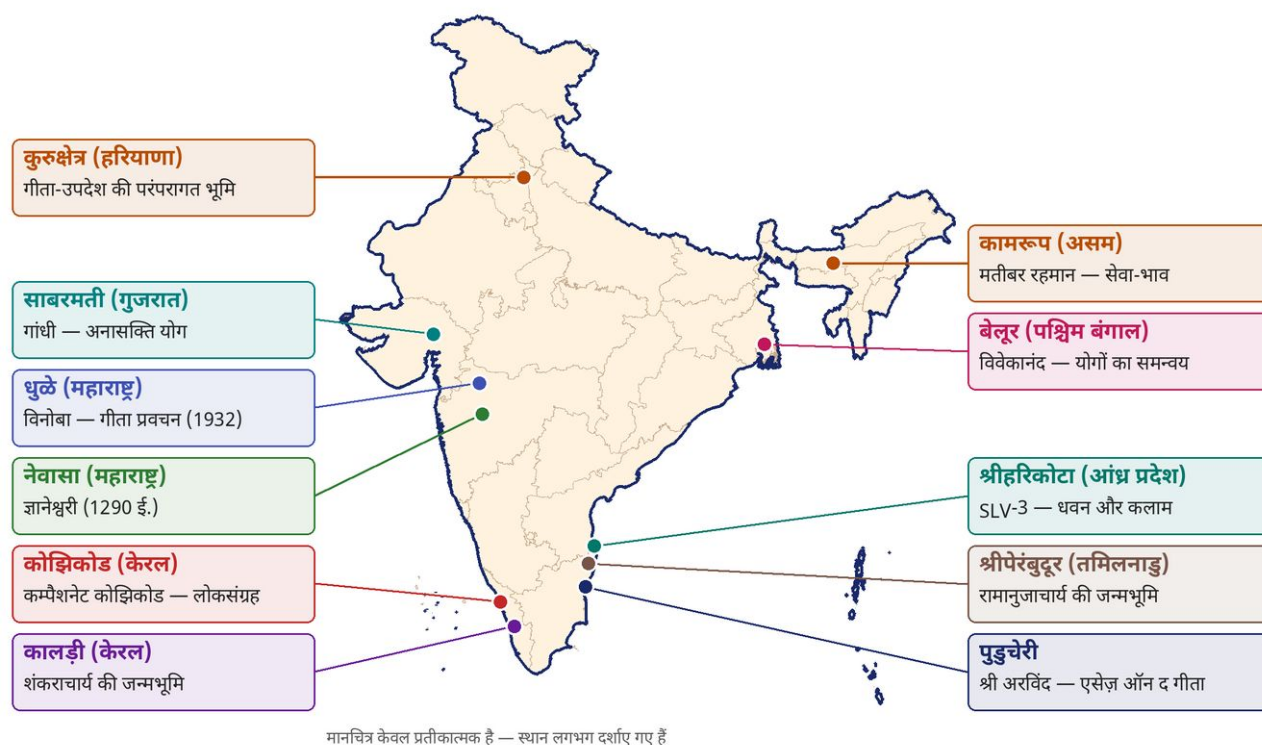
“ जब संदेह मुझे घेर लेते हैं, जब निराशा मेरे सामने खड़ी होती है और क्षितिज पर आशा की एक भी किरण दिखाई नहीं देती, तब मैं भगवद्गीता की ओर मुड़ता हूँ और मुझे सांत्वना देने वाला कोई न कोई श्लोक मिल जाता है। (When doubts haunt me, when disappointments stare me in the face, and I see not one ray of hope on the horizon, I turn to Bhagavad Gita and find a verse to comfort me.) ” — महात्मा गांधी (Mahatma Gandhi), यंग इंडिया, 1925

### 1.4 गीता से प्रभावित कुछ प्रमुख व्यक्तित्व

- ◆ जर्मन दार्शनिक विल्हेम फॉन हम्बोल्ट (Wilhelm von Humboldt) ने गीता के बारे में लिखा — 'यह अब तक किसी भी ज्ञात भाषा में रचित सबसे सुंदर, शायद एकमात्र सच्चा दार्शनिक गीत है।' (यह उद्धरण अक्सर गलती से हेगेल के नाम से भी प्रचलित हो जाता है, जबकि वास्तव में हम्बोल्ट के इस निबंध पर हेगेल की टिप्पणी कहीं अधिक आलोचनात्मक और मिश्रित थी।)
- ◆ परमाणु वैज्ञानिक जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर (मैनहटन प्रोजेक्ट के वैज्ञानिक निदेशक) ने गीता के अध्याय 11, श्लोक 32 का हवाला देकर परमाणु बम पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी — 'अब मैं काल (मृत्यु) बन गया हूँ, लोकों का नाश करने वाला।' ध्यान रहे — यह चर्चित उद्धरण उन्होंने वर्ष 1965 के एक टीवी साक्षात्कार में, ट्रिनिटी परीक्षण (जुलाई 1945) को याद करते हुए दिया था — यानी यह घटना के तुरंत बाद का बयान नहीं, बल्कि वर्षों बाद की एक स्मृति है, जो समय के साथ लोकप्रिय मिथक में बदल गई।
- ◆ भारत में ब्रिटिश शासन के पहले गवर्नर-जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स ने 1785 में चार्ल्स विल्किंस द्वारा किए गए गीता के पहले अंग्रेज़ी अनुवाद की भूमिका में लिखा था कि गीता का ज्ञान तब भी जीवित रहेगा, जब ब्रिटिश साम्राज्य का नामोनिशान तक मिट चुका होगा।
- ◆ ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने ब्रिटिश संसद (हाउस ऑफ कॉमन्स) में सांसद पद की शपथ भगवद्गीता पर हाथ रखकर ली थी।
- ◆ अंतरिक्ष-यात्री सुनीता विलियम्स और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम — दोनों को गीता से गहरी प्रेरणा मिलने की बात अक्सर कही जाती है।
- ◆ यह व्यापक रूप से कहा जाता है कि स्वामी विवेकानंद अपने साथ हमेशा केवल दो पुस्तकें रखते थे — भगवद्गीता और 'द इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट' (The Imitation of Christ) — हालाँकि यह किस्सा मुख्यतः लोक-स्मृति व जीवनी-साहित्य में मिलता है, इसके हर विवरण के साथ प्रामाणिक ऐतिहासिक पुष्टि उपलब्ध नहीं है।

New India Education by Omkar Sir

## गीता की परंपरा और इस अध्याय की सच्ची कहानियों का भारत-मानचित्र



चित्र 4.6: गीता की परंपरा और इस अध्याय की सच्ची कहानियों का भारत-मानचित्र

**गीता की वैश्विक प्रासंगिकता:** ओपेनहाइमर और हेस्टिंग्स के उदाहरण गीता की वैश्विक प्रासंगिकता के सबसे सशक्त प्रमाण हैं। ओपेनहाइमर के प्रसंग में सही श्लोक (11:32) और सही संदर्भ याद रखना ज़रूरी है — यह उद्धरण उन्होंने 1965 के एक साक्षात्कार में याद करते हुए दिया था, परीक्षण के समय की तात्कालिक प्रतिक्रिया के रूप में नहीं।

## 2. अर्जुन की नैतिक दुविधा (अध्याय 1: अर्जुन विषाद योग)

गीता का जन्म एक भीषण नैतिक दुविधा से हुआ — धर्म की रक्षा के लिए अपने ही परिजनों, गुरुओं व स्वजनों से युद्ध करना। यह किसी भी प्रशासनिक दुविधा का एक शक्तिशाली प्रतीक है, जहाँ कर्तव्य और व्यक्तिगत/पारिवारिक संबंध आमने-सामने आ जाते हैं।

**अर्जुन के संकट पर कृष्ण के तीन केंद्रीय उपदेश:** (1) **व्यक्तिगत मोह से ऊपर कर्तव्य (धर्म)** — कर्तव्य मानव-जीवन का अभिन्न अंग है और उसे बिना व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या भावनात्मक हस्तक्षेप के निभाना चाहिए; (2) **निःस्वार्थ कर्म** — व्यक्ति निजी लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के बड़े हित के लिए कर्म करे; (3) **अनासक्ति** — भौतिक इच्छाओं से अलगाव और अपने स्वभाव तथा नैतिक दायित्वों के अनुरूप आचरण। ये तीनों उपदेश आज के किसी भी अधिकारी की उस दुविधा का उत्तर हैं, जहाँ रिश्ते और कर्तव्य आमने-सामने हों।

| धर्म की रक्षा (Duty to Dharma)                                     | परिवार की रक्षा (Duty to Family)                          |
|--------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------|
| ◆ अन्याय के खिलाफ लड़ना आवश्यक था।                                 | ◆ अपने ही गुरुओं व परिजनों के विरुद्ध शस्त्र उठाना पड़ता। |
| ◆ धृतराष्ट्र का शासन अधर्म पर टिका था।                             | ◆ भीष्म, द्रोणाचार्य जैसे आदरणीयों का वध करना पड़ता।      |
| ◆ युद्ध से दूर भागना कायरता मानी जाती।                             | ◆ युद्ध में समूचे कुल के नाश की आशंका थी।                 |
| ◆ "स्वधर्मं निधनं श्रेयः" — अपने कर्तव्य में मृत्यु भी श्रेष्ठ है। | ◆ व्यक्तिगत भावनाओं व मोह का भारी दबाव था।                |

## अर्जुन की दुविधा — दो कर्तव्यों का टकराव

| धर्म की रक्षा          | बनाम          | परिवार की रक्षा             |
|------------------------|---------------|-----------------------------|
| अन्याय का विरोध आवश्यक | मूल तर्क      | अपनों का वध पाप             |
| अधर्म पर टिका शासन     | सामने         | भीष्म, द्रोण जैसे आदरणीय    |
| अन्याय की जीत          | परिणाम का डर  | कुल-नाश, समाज में अव्यवस्था |
| कानून और कर्तव्य       | आज का रूप     | रिश्ते और सामाजिक दबाव      |
| कर्तव्य सर्वोपरि       | गीता का उत्तर | मोह छोड़ो, पर करुणा नहीं    |

चित्र 4.7: अर्जुन की दुविधा — दो कर्तव्यों का टकराव

 **प्रशासनिक सादृश्य:** अर्जुन की दुविधा को आज के संदर्भ में ऐसे समझा जा सकता है — जब एक IAS या RPS अधिकारी को किसी प्रभावशाली परिजन या करीबी परिचित के खिलाफ ही कानूनी कार्रवाई करनी पड़े। गीता का उत्तर स्पष्ट है — कर्तव्य को व्यक्तिगत संबंधों से ऊपर रखा जाना चाहिए, भले ही यह भावनात्मक रूप से कितना भी कठिन क्यों न हो।

### आज का अर्जुन — एक कल्पना

कल्पना कीजिए एक युवा IAS अधिकारी की, जिसे अपनी पहली पोस्टिंग में ही यह आदेश मिलता है कि वह अपने ही किसी करीबी परिचित या प्रभावशाली रिश्तेदार की अवैध खनन गतिविधि के खिलाफ कार्रवाई करे। एक तरफ कानून और कर्तव्य है, दूसरी तरफ पारिवारिक-सामाजिक दबाव और रिश्तों का बोझ। ठीक यही दुविधा, परंपरागत मान्यता के अनुसार हजारों वर्ष पहले, कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन के सामने खड़ी थी — जब उसे अपने ही गुरुओं और परिजनों के खिलाफ युद्ध करना था। अर्जुन का यह 'संकट' ही भगवद्गीता के जन्म का कारण बना। यही कारण है कि गीता को सिर्फ एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक ऐसी व्यावहारिक 'प्रशासनिक नियमावली' कहा जाता है, जो आज भी किसी अधिकारी को अपने कर्तव्य और व्यक्तिगत संबंधों के बीच सही रास्ता चुनने में मदद कर सकती है।

## 3. निष्काम कर्मयोग (Nishkama Karma) — फल की इच्छा के बिना कर्तव्य

### गीता का सबसे प्रसिद्ध श्लोक

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥" (अध्याय 2, श्लोक 47) — अर्थात्, तुम्हें अपना निर्धारित कर्तव्य करने का अधिकार है, परंतु फल पाने का अधिकार नहीं। कर्मफल की कामना के लिए प्रेरित मत हो, और कर्म न करने में भी आसक्त मत रहो।

### आसान परिभाषा: निष्काम कर्म (Nishkama Karma)

 **परिभाषा:** बिना किसी फल, पुरस्कार या प्रशंसा की चाह के, केवल अपने कर्तव्य की भावना से कर्म करना।

 **आसान भाषा में:** जैसे एक माँ अपने बच्चे की देखभाल किसी इनाम की उम्मीद में नहीं, बल्कि इसलिए करती है क्योंकि यह उसका स्वाभाविक कर्तव्य है — फल (बच्चे का भविष्य कैसा बनेगा) उसके हाथ में नहीं, पर देखभाल करना उसके हाथ में है।  **उदाहरण:** एक ईमानदार अधिकारी सिर्फ इसलिए सही फैसला नहीं लेता कि इससे उसे पदोन्नति या प्रशंसा मिलेगी, बल्कि इसलिए लेता है क्योंकि यह उसका कर्तव्य है — चाहे बदले में तबादला ही क्यों न झेलना पड़े।

**कर्म का त्याग नहीं, कर्म में त्याग:** निष्काम कर्म का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति लक्ष्य ही न रखे या परिणाम की परवाह ही न करे। इसका अर्थ है कि वह परिणाम को ध्यान में रखकर पूरी योजना और मेहनत से काम करे, पर परिणाम के प्रति **आसक्ति** (Attachment) न रखे — यानी सफलता मिले तो घमंड नहीं, विफलता मिले तो निराशा नहीं, और फल के लालच में गलत साधन भी नहीं। गीता कहती है — "नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः" (3.8) — अपना निर्धारित कर्म करो, क्योंकि कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है।

### आसान परिभाषा: अनासक्ति (Non-Attachment)

 **परिभाषा:** कर्म करते हुए उसके परिणाम, पुरस्कार, प्रशंसा या स्वार्थ से मन को न बाँधना — यानी कर्म को पूरी निष्ठा से करना पर उसके फल पर अपना मानसिक अधिकार न जमाना।

 **आसान भाषा में:** काम पूरे मन से करो, पर "मुझे क्या मिलेगा" की चिंता को मन पर हावी मत होने दो।  **उदाहरण:** एक क्रिकेट अंपायर पूरी सावधानी से हर निर्णय देता है, पर उसे इससे कोई मतलब नहीं कि कौन-सी टीम जीतेगी — यही अनासक्ति है।

### 3.1 निष्काम कर्म से मिलने वाली पाँच स्वतंत्रताएँ

| स्वतंत्रता                    | अर्थ                                                                 | प्रशासनिक उपयोग                                                                   |
|-------------------------------|----------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------|
| आसक्ति (Attachment) से मुक्ति | फल की चिंता और व्याकुलता से मुक्ति।                                  | पदस्थापन (Posting), पदोन्नति (Promotion) व प्रशंसा की चाह से मुक्त होकर काम करना। |
| अकर्मण्यता से मुक्ति          | 'क्लैव्यं मा स्म गमः' — कायरता और लालफीताशाही (Red Tapism) का त्याग। | टालमटोल व निष्क्रियता (Apathy) को दूर करना।                                       |
| क्रोध से मुक्ति               | अपेक्षित परिणाम न मिलने पर भी क्रोध न आना।                           | एक कुंठित, चिड़चिड़े अधिकारी (Frustrated Officer) बनने से बचाव।                   |
| अहंकार से मुक्ति              | 'यस्य नाहंकृतो भावः' — 'मैं ही कर्ता हूँ' की भावना का त्याग।         | अधिकारी खुद को जनता का सेवक समझे, शासक नहीं।                                      |
| कर्महीनता से मुक्ति           | 'कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः' — कुछ न करने से बेहतर है कर्म करना।          | प्रशासनिक निष्क्रियता (Bureaucratic Inaction) से बचाव।                            |

### निष्काम कर्म — पाँच स्वतंत्रताएँ

#### निष्काम कर्म

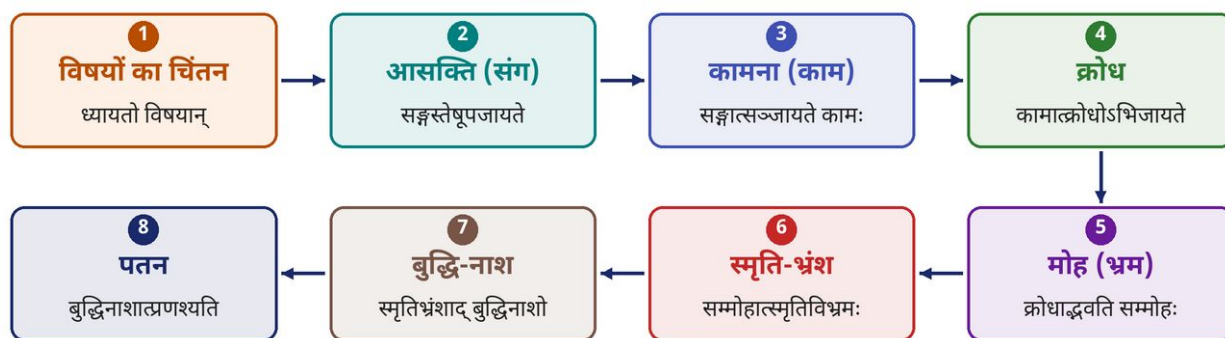


चित्र 4.8: निष्काम कर्म — पाँच स्वतंत्रताएँ

- ◆ महात्मा गांधी ने निष्काम कर्म को 'अनासक्ति (Non-Attachment)' कहा — परिणाम को ईश्वर या नियति पर छोड़कर, केवल कर्तव्य पर ध्यान केंद्रित करना।
- ◆ आधुनिक प्रबंधन-चिंतन में इसे कई बार 'वर्तमान क्षण में जीना और परिणाम की चिंता छोड़ना (Not Attached To Outcome)' जैसी अवधारणाओं से भी जोड़ा जाता है।

💡 **दुष्चक्र (Vicious Cycle) — गीता के अनुसार पतन का क्रम:** गीता बताती है कि विषयों का चिंतन → आसक्ति → इच्छाओं व वासना (काम) की प्रधानता → क्रोध → बौद्धिक भ्रम (सम्मोह) → स्मृति-भ्रम → विवेक (बुद्धि) का नाश — इस तरह एक दुष्चक्र चलता रहता है (अध्याय 2, श्लोक 62-63 पर आधारित)। निष्काम कर्म इसी चक्र को शुरुआत में ही तोड़ने की कुंजी है।

### पतन की सीढ़ी — गीता 2.62-63



चित्र 4.9: पतन की सीढ़ी — गीता 2.62-63

**इस सीढ़ी का प्रशासनिक अर्थ:** किसी अधिकारी का पतन अचानक नहीं होता। पहले वह किसी सुविधा या लाभ के बारे में बार-बार सोचता है (चिंतन), फिर उसका मोह जागता है (आसक्ति), फिर उसे पाने की इच्छा बनती है (कामना); जब कोई बाधा आती है तो क्रोध आता है, क्रोध से विवेक धुंधला होता है, सही-गलत की याद मिट जाती है और अंत में बुद्धि ही नष्ट हो जाती है — यहीं भ्रष्टाचार जन्म लेता है। इसलिए गीता का उपाय पहली सीढ़ी पर ही रुकना है — विचारों पर नियंत्रण।

### 📖 कहानी: "कागज़ी आँकड़े" — एक विकास अधिकारी और रैंकिंग का दबाव

बाड़मेर ज़िले की एक पंचायत समिति के विकास अधिकारी रमेश (काल्पनिक नाम) पर ज़िले से लगातार दबाव था — "आपकी पंचायत समिति खुले में शौच से मुक्त (ODF) घोषित होने में सबसे पीछे है, इस महीने के अंत तक 100% दिखाइए, वरना ज़िले की रैंकिंग गिर जाएगी।" कुछ ग्राम सचिवों ने सुझाव दिया — "साहब, आधे शौचालयों की बस दीवारें खड़ी हैं, पर फ़ोटो खिंच गए हैं। रिपोर्ट में पूरा दिखा देते हैं, बाक़ी अगले महीने बन जाएंगे।"

रमेश के सामने दुविधा थी। एक ओर उनकी अपनी वार्षिक रिपोर्ट, अधिकारियों की नाराज़गी और "अक्षम" कहलाने का डर; दूसरी ओर यह सच कि कागज़ पर पूरा दिखते ही योजना का पैसा रुक जाएगा, और जिन परिवारों के शौचालय अधूरे हैं, वे हमेशा के लिए छूट जाएंगे। उन्हें गीता का वह श्लोक याद आया जो उनकी माँ रोज़ सुबह पढ़ती थीं — "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

रमेश ने सच्ची रिपोर्ट भेजी — 71% — और साथ में एक चार हफ़्ते की ठोस कार्ययोजना भी: अधूरे शौचालयों की गाँव-वार सूची, हर गाँव के लिए जिम्मेदार कर्मचारी, स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं की निगरानी-टोली, और पानी की कमी वाले गाँवों के लिए टाँके (जल-संग्रह) से जोड़ने का प्रस्ताव। ज़िले की बैठक में उन्हें फटकार मिली। वे शांत रहे और केवल अपनी कार्ययोजना रखी।

छह हफ़्ते बाद उनकी पंचायत समिति वास्तव में ODF हुई — और जब राज्य स्तर से अचानक भौतिक सत्यापन (Physical Verification) की टीम आई, तो ज़िले की कई पंचायत समितियों के "100%" आँकड़े ग़लत निकले, पर रमेश की हर रिपोर्ट सही मिली। अगले वर्ष उन्हें ज़िले की निगरानी-समिति का संयोजक बनाया गया। रमेश ने अपनी डायरी में लिखा — "रैंकिंग फल थी; शौचालय कर्म था। मैंने कर्म चुना, फल अपने आप आ गया।"

🔑 इस कहानी से सीख: निष्काम कर्म का अर्थ परिणाम की उपेक्षा नहीं, बल्कि परिणाम की आसक्ति में ग़लत साधनों से बचना है। लक्ष्य-आधारित दबाव (रैंकिंग, आँकड़े) अक्सर अधिकारियों को कागज़ी सफलता की ओर धकेलता है; गीता सिखाती है कि सच्चा कर्म, ईमानदार रिपोर्टिंग और ठोस योजना ही स्थायी सफलता देते हैं।

**निष्काम कर्मयोग — सार:** मूल श्लोक (2.47), पाँच स्वतंत्रताओं में से आसक्ति और अकर्मण्यता से मुक्ति, और गांधीजी की 'अनासक्ति' वाली व्याख्या — ये तीनों मिलकर निष्काम कर्म की अवधारणा को पूरी तरह स्पष्ट कर देते हैं।

## 4. स्थितप्रज्ञ (Sthita Pragna) — स्थिर बुद्धि वाला प्रशासक

### ☀ स्थितप्रज्ञ को परिभाषित करने वाला श्लोक

"दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥" (अध्याय 2, श्लोक 56) — अर्थात्, जिसका मन दुःखों में विचलित नहीं होता, जिसे सुखों की लालसा नहीं, और जो आसक्ति, भय व क्रोध से मुक्त है — वही स्थितप्रज्ञ (स्थिर बुद्धि वाला) कहलाता है।

### 🔍 आसान परिभाषा: स्थितप्रज्ञ (Sthita Pragna)

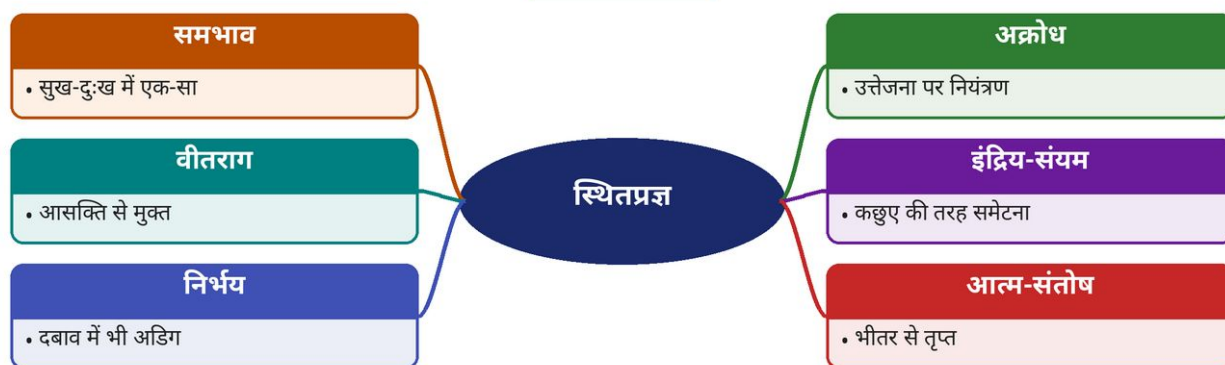
📖 परिभाषा: वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय — हर परिस्थिति में स्थिर व संतुलित बनी रहती है, और जो आसक्ति, भय व क्रोध जैसी अस्थिर करने वाली भावनाओं से मुक्त है।

💡 आसान भाषा में: जैसे एक अनुभवी पायलट खराब मौसम में भी घबराता नहीं, बल्कि शांत मन से सोच-समझकर विमान उतारता है — उसकी बुद्धि परिस्थिति के दबाव में डगमगाती नहीं। 🏠 उदाहरण: दंगे जैसी आपात-स्थिति में एक स्थितप्रज्ञ अधिकारी न तो घबराकर ग़लत निर्णय लेता है, न ही अहंकार में आकर अनुचित बल-प्रयोग करता है — वह शांत मन से स्थिति का आकलन कर संतुलित निर्णय लेता है।

### 4.1 स्थितप्रज्ञ के लक्षण — गीता के अनुसार

| श्लोक (भावार्थ)                       | लक्षण          | सरल अर्थ                                  |
|---------------------------------------|----------------|-------------------------------------------|
| "समदुःखसुखं धीरम्"                    | सम भाव         | सुख-दुःख में एकसमान रहने वाला — धैर्यवान। |
| "सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ" | समत्व          | लाभ-हानि, जय-पराजय में समभाव रखना।        |
| "सिद्धयसिद्धयोः समो"                  | निष्पक्षता     | सफलता-असफलता में भी मन समान रहे।          |
| "अनुद्विग्नमनाः"                      | मानसिक स्थिरता | मन कभी विचलित या परेशान नहीं होता।        |
| "नाभिनन्दति न द्वेष्टि"               | तटस्थता        | न शुभ पर अति-प्रसन्नता, न अशुभ पर दुःख।   |
| "वीतरागभयक्रोधः"                      | त्रि-मुक्ति    | आसक्ति, भय और क्रोध — तीनों से मुक्त।     |

## स्थितप्रज्ञ — स्थिर बुद्धि वाले के लक्षण



चित्र 4.10: स्थितप्रज्ञ — स्थिर बुद्धि वाले के लक्षण

### 4.2 स्थितप्रज्ञ का प्रशासन में उपयोग

| प्रशासनिक कौशल                                    | स्थितप्रज्ञ से यह कौशल कैसे मिलता है                                                                       |
|---------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| प्रभावी निर्णय-क्षमता (Effective Decision Making) | संकटकाल में भी तार्किक और उचित निर्णय — दबाव में आए बिना।                                                  |
| भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)    | सुख-दुःख में एकसमान रहने से दूसरों की भावनाओं को बेहतर समझ पाना।                                           |
| विवाद-समाधान (Conflict Resolution)                | क्रोध व आसक्ति से मुक्त होने पर विवाद सुलझाना आसान हो जाता है।                                             |
| तनाव-प्रबंधन (Stress Management)                  | दंगों व आपदाओं जैसी स्थितियों में भी मानसिक स्थिरता बनाए रखना।                                             |
| निष्पक्ष नेतृत्व (Impartial Leadership)           | न किसी से विशेष प्रेम, न द्वेष — भाई-भतीजावाद (Nepotism) से मुक्ति।                                        |
| अनुकूलनशीलता (Adaptability)                       | "वासांसि जीर्णानि" — जैसे पुराने वस्त्र त्यागकर नए पहनते हैं, वैसे ही नई पोस्टिंग/विभाग में तुरंत ढल जाना। |

**स्थितप्रज्ञ और भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** आधुनिक मनोविज्ञान में जिसे **भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)** कहा जाता है — अपनी भावनाओं को पहचानना, उन्हें नियंत्रित करना और दूसरों की भावनाओं को समझना — उसका बहुत पुराना और गहरा रूप गीता का स्थितप्रज्ञ है। गीता कहती है — "उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्" (6.5) — मनुष्य स्वयं ही अपना उद्धार करे, स्वयं को नीचे न गिरने दे; क्योंकि मन ही मनुष्य का मित्र है और मन ही उसका शत्रु।

#### 📖 कहानी: "भीड़ के सामने शांत मन" — एक SDM की सबसे लंबी रात

झालावाड़ ज़िले के एक उपखंड के सरकारी अस्पताल में प्रसव के दौरान एक युवा माँ की मृत्यु हो गई। खबर फैलते ही सैकड़ों लोग अस्पताल के बाहर जमा हो गए। परिजन आरोप लगा रहे थे कि डॉक्टर समय पर नहीं आए। कुछ लोग पथराव पर उतारू थे, और भीतर डॉक्टर-नर्स डर के मारे कमरों में बंद थे। उपखंड अधिकारी **अनुराधा** (काल्पनिक नाम) रात ग्यारह बजे वहाँ पहुँचीं।

भीड़ में से किसी ने उन पर चिल्लाकर कहा — "आप भी इन्हीं की तरफ़ हैं!" एक युवक ने उनकी गाड़ी पर हाथ मारा। उनके साथ आए एक कर्मचारी ने कहा — "मैडम, पुलिस बल बुलाकर भीड़ हटवा देते हैं।" अनुराधा जानती थीं कि बल-प्रयोग से आग और भड़केगी; और यह भी कि उनके अपने मन में उस युवक के व्यवहार पर गुस्सा था। उन्होंने कुछ पल आँखें बंद कीं, गहरी साँस ली और गीता का वह श्लोक मन में दोहराया जो प्रशिक्षण के दिनों से उनकी डायरी में लिखा था — "दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः..."

वे गाड़ी से उतरिं, बिना माइक के, परिजनों के पास ज़मीन पर बैठ गईं और सबसे पहले मृत महिला के पति का हाथ पकड़कर कहा — "मुझे आपकी पत्नी के जाने का गहरा दुःख है। मैं यहाँ से तब तक नहीं जाऊँगी, जब तक आपको हर सवाल का जवाब न मिल जाए।" उन्होंने वहीं तीन घोषणाएँ कीं — ज़िला स्तर के विशेषज्ञ डॉक्टरों की जाँच समिति, जो 72 घंटे में रिपोर्ट देगी; परिजनों की इच्छा पर वीडियो-रिकॉर्डिंग में पोस्टमार्टम; और नियमानुसार तत्काल आर्थिक सहायता। साथ ही उन्होंने स्पष्ट कहा कि अस्पताल-कर्मियों पर हिंसा भी अपराध है और कोई भी क़ानून हाथ में न ले।

भीड़ धीरे-धीरे शांत हो गई। सुबह चार बजे जब वे लौटीं, तब तक न कोई घायल हुआ था, न कोई गिरफ़्तारी हुई थी। जाँच में ड्यूटी-रोस्टर की लापरवाही सामने आई, जिस पर कार्रवाई हुई और अस्पताल में रात्रि-ड्यूटी की नई व्यवस्था बनी। महीनों बाद उसी युवक ने, जिसने गाड़ी पर हाथ मारा था, एक जनसुनवाई में आकर माफ़ी माँगी और कहा — "उस रात आप भी गुस्सा हो जातीं, तो पता नहीं क्या हो जाता।"

🔑 **इस कहानी से सीख:** स्थितप्रज्ञता का अर्थ भावनाहीन होना नहीं, बल्कि अपनी भावनाओं (क्रोध, भय) पर नियंत्रण रखकर दूसरों की भावनाओं (शोक, आक्रोश) को समझना है। संकट में शांत मन, समानुभूति, पारदर्शी घोषणाएँ और क़ानून के प्रति दृढ़ता — यही स्थितप्रज्ञ प्रशासक की पहचान है।

अन्य परंपराओं में स्थितप्रज्ञ जैसा भाव: बौद्ध धर्म में उपेक्खा (Upekkha — जीवन के उतार-चढ़ाव में समभाव) को चार ब्रह्मविहारों में गिना गया है — मेत्ता (मैत्री), करुणा, मुदिता (दूसरों की खुशी में निःस्वार्थ प्रसन्नता) और उपेक्खा। गीता का "समत्वं योग उच्यते" और बुद्ध की उपेक्खा — दोनों एक ही सत्य की ओर संकेत करते हैं: बाहरी परिस्थिति चाहे जैसी हो, भीतर का संतुलन नहीं डगमगाना चाहिए।

 **ध्यान रहे:** स्थितप्रज्ञ की अवधारणा की तुलना कई बार अंग्रेजी कवि रुडयार्ड किपलिंग की प्रसिद्ध कविता 'If—' से भी की जाती है, क्योंकि दोनों में विपरीत परिस्थितियों में भी संयम बनाए रखने का भाव समान दिखता है। हालाँकि ऐतिहासिक रूप से किपलिंग ने स्वयं बताया था कि यह कविता उन्होंने लीएंडर स्टार जेमिसन (Leander Starr Jameson) के जीवन से प्रेरित होकर लिखी थी, गीता से नहीं — इसलिए इसे 'गीता से सीधे प्रेरित' कहने के बजाय 'भाव-साम्य रखने वाला' उदाहरण कहना अधिक सटीक रहेगा। भारतीय क्रिकेट में महेंद्र सिंह धोनी को अक्सर 'कैप्टन कूल' कहा जाना — यह स्थितप्रज्ञ नेतृत्व का एक सहज-बोधगम्य लोकप्रिय उदाहरण है।

**प्रशासनिक उत्तरदायित्व में स्थितप्रज्ञ की भूमिका:** स्थितप्रज्ञ अधिकारी संकट और दबाव में भी संतुलित निर्णय लेता है। उसकी यह क्षमता आधुनिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) और तनाव-प्रबंधन (Stress Management) के समान है — यही उसे प्रभावी और विश्वसनीय प्रशासक बनाती है।

## 5. स्वधर्म और परधर्म (Swadharma and Paradharma)

### मूल श्लोक

"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।" (अध्याय 3, श्लोक 35) — अर्थात्, अपने निर्धारित कर्तव्य (स्वधर्म) का पालन करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना भी बेहतर है, दूसरे के मार्ग (परधर्म) का अनुसरण करना खतरनाक है।

### आसान परिभाषा: स्वधर्म एवं परधर्म

 **परिभाषा:** स्वधर्म = अपनी प्रकृति, योग्यता, स्थिति और पद के अनुसार निर्धारित कर्तव्य। परधर्म = किसी दूसरे का कर्तव्य, जो अपनी प्रकृति के विपरीत है, फिर भी उसे अपना लेना।

 **आसान भाषा में:** जैसे एक कुशल शिक्षक अगर पढ़ाना छोड़कर सिर्फ व्यापार करने लगे (जो उसका स्वधर्म नहीं), तो न वह अच्छा व्यापारी बन पाएगा, न उसने जो असली काम सीखा था वह आगे बढ़ पाएगा।  **उदाहरण:** एक प्रशासक का स्वधर्म है — संविधान का पालन करना, जनसेवा करना और आचार संहिता का सम्मान करना। यदि वह इसके बजाय किसी राजनीतिक दल का पक्ष लेने लगे (जो उसका परधर्म है), तो यह उसके पद की मूल भावना के विरुद्ध है।

◆ गीता के अनुसार — "कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि" (2.33) — कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि यदि तुम यह धर्मयुद्ध नहीं करोगे तो अपना कर्तव्य और कीर्ति खोकर पाप के भागी बनोगे। यानी स्वधर्म का पालन न करने पर व्यक्ति को पाप और अपयश, दोनों प्राप्त होते हैं।

◆ "सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते" (2.34) — सम्मानित व्यक्ति के लिए अपयश (बदनामी), मृत्यु से भी बुरा माना गया है। एक अधिकारी के लिए इसका अर्थ है कि कर्तव्य से भागकर मिली बदनामी, कर्तव्य निभाने में आने वाले किसी भी कष्ट से बड़ा नुकसान है।

| व्यक्ति                 | स्वधर्म (Swadharma)                                         | परधर्म (Paradharma) का उदाहरण                                    |
|-------------------------|-------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------|
| प्रशासक (Administrator) | संविधान का पालन, जनसेवा, आचार संहिता का सम्मान।             | किसी राजनीतिक दल का पक्ष लेना, भ्रष्टाचार में लिप्त होना।        |
| पुलिस अधिकारी           | कानून-व्यवस्था बनाए रखना, अपराध नियंत्रण, BNS/BNSS का पालन। | अपराधियों से साठ-गाँठ करना।                                      |
| शिक्षक                  | ज्ञान प्रदान करना, छात्रों का सही मार्गदर्शन करना।          | निजी ट्यूशन पर अधिक ध्यान देकर स्कूल के दायित्व की उपेक्षा करना। |
| डॉक्टर                  | जीवन बचाना, चिकित्सा-नैतिकता व नीति का पालन।                | चिकित्सा-नैतिकता तोड़ना, अनुचित कमीशन (Kickbacks) लेना।          |

## स्वधर्म बनाम परधर्म

| स्वधर्म                         | बनाम           | परधर्म                     |
|---------------------------------|----------------|----------------------------|
| अपनी प्रकृति, योग्यता, पद       | आधार           | दूसरे का कर्तव्य या रास्ता |
| संविधान, जनसेवा, नियम           | प्रशासक के लिए | दलगत पक्ष, निजी लाभ        |
| आत्म-संतोष, कीर्ति              | परिणाम         | भय, अपयश, भ्रम             |
| श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः (18.47) | गीता           | परधर्मो भयावहः (3.35)      |

चित्र 4.11: स्वधर्म बनाम परधर्म

**"श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्" (18.47):** अपना कर्तव्य, भले ही उसमें कुछ कमियाँ हों, दूसरे के अच्छी तरह निभाए गए कर्तव्य से श्रेष्ठ है। प्रशासनिक भाषा में इसका अर्थ है — हर संस्था और हर अधिकारी अपनी भूमिका की सीमा में रहकर उसे पूरी निष्ठा से निभाए; न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका का **शक्ति-पृथक्करण** भी इसी "स्वधर्म" की आधुनिक अभिव्यक्ति माना जा सकता है — क्योंकि इसमें विधायिका कानून बनाती है, कार्यपालिका उन्हें लागू करती है और न्यायपालिका न्याय करती है; कोई भी अंग दूसरे का काम अपने हाथ में नहीं लेता।

◆ लोकसंग्रह (नीचे खंड 6 देखें) भी समाज में रहने वाले हर व्यक्ति का एक तरह से स्वधर्म ही माना जाता है, क्योंकि अपने अच्छे आचरण से समाज को जोड़े रखना और दूसरों के लिए उदाहरण बनना हर व्यक्ति का कर्तव्य है — केवल नेताओं का नहीं।

### 5.1 धर्म का वास्तविक अर्थ — "धारणाद्धर्म इत्याहुः"

**"धर्म"** शब्द संस्कृत धातु "धृ" से बना है, जिसका अर्थ है — धारण करना, एक साथ बाँधे रखना, टिकाए रखना और पोषण करना। इसलिए धर्म का शाब्दिक अर्थ है वह सिद्धांत, जो व्यक्ति के जीवन और समाज की व्यवस्था को एक साथ बाँधे रखे — "धारणाद्धर्म इत्याहुः" (जो धारण करे, वही धर्म है)। इस अर्थ में धर्म किसी संप्रदाय का नाम नहीं, बल्कि **सामाजिक और नैतिक व्यवस्था का आधार** है।

चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में धर्म हमेशा सबसे पहले आता है, क्योंकि अर्थ और काम की खोज भी नैतिक मूल्यों के अनुरूप होनी चाहिए। एक प्रसिद्ध संस्कृत सूक्ति कहती है कि आहार, निद्रा, भय और काम — ये मनुष्य और पशु में समान हैं; **धर्म ही मनुष्य की विशेषता** है। पूर्वी चिंतन में धर्म का एक अर्थ **प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों के अनुरूप आचरण** भी है — भौतिक प्रकृति के भी और मानव-स्वभाव के भी। जब विचार सत्य और शुभ की ओर उन्मुख हो, न कि केवल स्वार्थ की ओर, तो उससे निकला कर्म "धर्म-सम्मत" या "उचित" कहलाता है। इसीलिए गीता कहती है कि **अपना कर्तव्य निभाना ही सबसे बड़ा धर्म** है।

## 6. लोकसंग्रह (Lok Sangraha) — विश्व-कल्याण

### ☀ मूल श्लोक

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥" (अध्याय 3, श्लोक 21) — अर्थात्, श्रेष्ठ व्यक्ति जो आचरण करता है, सामान्य लोग उसी का अनुसरण करते हैं। वह जो भी मानक स्थापित करता है, सारा समाज उसी का अनुकरण करता है।

### 🔍 आसान परिभाषा: लोकसंग्रह (Lok Sangraha)

📖 **परिभाषा:** 'लोक' का अर्थ है विश्व/समाज, और 'संग्रह' का अर्थ है एकसाथ बाँधे रखना — अर्थात् सभी लोगों को एक सेवा-भावना और साझा कल्याण के सिद्धांत से जोड़े रखना।

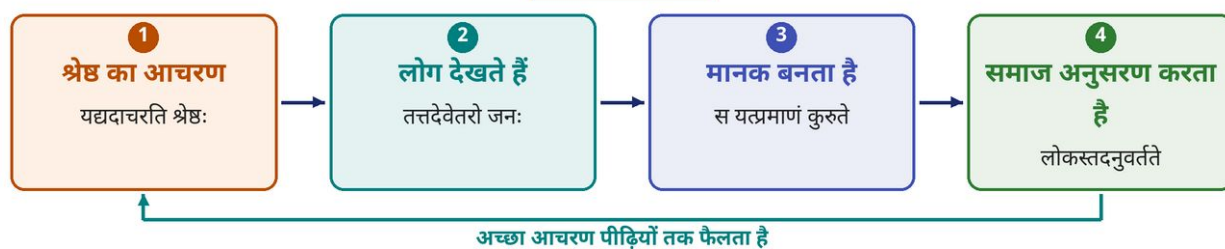
💡 **आसान भाषा में:** जैसे एक कक्षा-मॉनिटर की अनुशासित आदतें देखकर बाकी छात्र भी अनुशासित रहना सीखते हैं — नेता का आचरण पूरे समूह के लिए एक मानक बन जाता है। 🏠 **उदाहरण:** जब कोई वरिष्ठ अधिकारी खुद समय पर दफ्तर आता है और नियमों का ईमानदारी से पालन करता है, तो उसके अधीनस्थ कर्मचारी भी स्वतः वैसा ही आचरण करने लगते हैं — यही लोकसंग्रह का प्रशासनिक रूप है।

◆ "सर्वभूतहिते रताः" (5.25; 12.4) — सभी प्राणियों के कल्याण के प्रति समर्पित रहना। गीता यह गुण ज्ञानी और सच्चे भक्त, दोनों का बताती है; लोकसंग्रह इसी भावना का व्यावहारिक रूप है, जिसमें व्यक्ति अपने कर्म को केवल अपने लिए नहीं, सबके हित के लिए करता है।

◆ लोकसंग्रह की अवधारणा उपयोगितावाद (Utilitarianism — अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख) से भी व्यापक मानी जाती है, क्योंकि यह किसी संख्यात्मक बहुमत तक सीमित न रहकर सार्वभौमिक कल्याण की बात करती है।

◆ "कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः" (अध्याय 3, श्लोक 20) — राजा जनक जैसे महान शासकों ने कर्म करते हुए ही पूर्णता (सिद्धि) प्राप्त की, कर्म त्यागकर नहीं।

## लोकसंग्रह कैसे काम करता है — गीता 3.21



चित्र 4.12: लोकसंग्रह कैसे काम करता है — गीता 3.21

“ राजा जनक जैसे महापुरुषों ने कर्म के द्वारा ही सिद्धि प्राप्त की; इसलिए लोकसंग्रह को देखते हुए भी तुम्हें कर्म करना ही चाहिए। (कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि॥) ” — भगवद्गीता 3.20

| विचारक                   | लोकसंग्रह की व्याख्या                                        |
|--------------------------|--------------------------------------------------------------|
| स्वामी विवेकानंद         | दूसरों की भलाई के लिए निःस्वार्थ कर्म करना।                  |
| श्री अरविंद              | समाज के लोगों को एकसाथ, संगठित रखना।                         |
| डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन | विश्व की एकता, समाज की अन्योन्याश्रयता व मानव-भाईचारे पर बल। |
| वसुधैव कुटुम्बकम्        | लोकसंग्रह का विस्तारित रूप — पूरा विश्व ही एक परिवार है।     |

### 6.1 प्रशासन में लोकसंग्रह का उपयोग

◆ नीतियों का ईमानदार क्रियान्वयन, सुशासन और जवाबदेही सुनिश्चित करना — क्योंकि जब अधिकारी स्वयं नियमों का ईमानदारी से पालन करता है और अपने काम का हिसाब देता है, तो उसके अधीनस्थ और जनता भी उसी आचरण को अपनाते हैं।

◆ अंतिम व्यक्ति तक पहुँच (Last Mile Delivery) — यानी योजना का लाभ गाँव-ढाणी के सबसे दूर और सबसे कमजोर व्यक्ति तक पहुँचे; इसके लिए सेवाओं को आसानी से उपलब्ध (Accessibility) बनाना और नागरिकों को अपने अधिकारों की जानकारी देकर सशक्त (Citizen Empowerment) करना ज़रूरी है। लोकसंग्रह का अर्थ ही है कि कोई भी पीछे न छूटे।

**लोकसंग्रह का वैश्विक रूप — वसुधैव कुटुम्बकम्:** लोकसंग्रह का भाव केवल गाँव या देश तक सीमित नहीं। भारत की **G20 अध्यक्षता (2023)** का मूल विषय था — “**वसुधैव कुटुम्बकम् — एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य**”। सार्वभौमिक भाईचारे और साझा भविष्य के इसी मूल्य ने जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य और सतत विकास जैसी वैश्विक चुनौतियों पर भारत के दृष्टिकोण को दिशा दी। यह दिखाता है कि एक गहराई से आत्मसात किया गया राष्ट्रीय मूल्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों और सामूहिक कार्य को भी आकार दे सकता है।

◆ सरदार पटेल (देशी रियासतों का भारत में एकीकरण करने वाले पहले गृह मंत्री), सी. राजगोपालाचारी (स्वतंत्र भारत के पहले और एकमात्र भारतीय गवर्नर-जनरल) और एम. विश्वेश्वरैया (मैसूर के दीवान और प्रसिद्ध इंजीनियर) जैसे महान प्रशासकों को भावी पीढ़ी के लिए आदर्श (Role Model) माना जाता है, क्योंकि उनका ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ आचरण आज भी अधिकारियों के लिए मानक का काम करता है — यही लोकसंग्रह है।

#### 🌟 लोकसंग्रह का आधुनिक रूप — “कम्पैशनेट कोझिकोड”

केरल के कोझिकोड ज़िले के कलेक्टर रहे **प्रशांत नायर** ने 2015 में “**कम्पैशनेट कोझिकोड**” (**Compassionate Kozhikode**) नाम से एक पहल शुरू की। इसमें सरकार ने बड़ा बजट नहीं लगाया, बल्कि आम नागरिकों को जोड़ा — “ऑपरेशन सुलैमानी” के तहत भूखे लोगों के लिए होटलों में मुफ्त भोजन के कूपन, सरकारी आश्रय-गृहों के बच्चों और बुजुर्गों के लिए नागरिकों का स्वैच्छिक सहयोग, और ज़रूरतमंदों की सूची से लोगों को सीधे जोड़ना।

एक अधिकारी की पहल ने पूरे शहर को सेवा के लिए प्रेरित कर दिया — यही गीता का **लोकसंग्रह** है: श्रेष्ठ व्यक्ति का आचरण, जो पूरे समाज को एक साझा कल्याण-भावना में बाँध देता है।

#### 🌟 कहानी — जब सेवा-भाव धर्म की सीमाओं से ऊपर उठ गया

असम के कामरूप ज़िले में हाजी मतीबर रहमान (जिन्हें स्थानीय लोग ‘मति काई’ भी कहते हैं) — एक मुस्लिम व्यक्ति — पिछली कई पीढ़ियों (कहा जाता है कि पाँच सौ वर्षों से अधिक — उत्तर गुवाहाटी के रंगमहल गाँव में) से चले आ रहे पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करते हुए एक शिव मंदिर की देखभाल करते हैं। वे स्वयं वर्ष 1977 से अपने पिता तैयब अली से यह ज़िम्मेदारी लेकर आज तक इस सेवा में जुटे हैं। धार्मिक पहचान से ऊपर उठकर निभाई गई यह सेवा-भावना ही लोकसंग्रह की सच्ची भावना का एक जीवंत उदाहरण है — जहाँ समाज की भलाई और सामूहिक सद्भाव, संकीर्ण पहचान से बड़ा हो जाता है।

**प्रशासन का उद्देश्य जन-कल्याण — लोकसंग्रह:** प्रशासन का अंतिम उद्देश्य जन-कल्याण है, और गीता का जो सिद्धांत इसका सबसे सीधा समर्थन करता है, वह लोकसंग्रह ही है। मूल श्लोक (3.21), उपयोगितावाद से इसकी तुलना और हाजी मतीबर रहमान जैसे सामाजिक-सद्भाव के उदाहरण — तीनों मिलकर इसकी पूरी तस्वीर बनाते हैं।

## 7. गीता के चार योग — मुक्ति के मार्ग

"योगः कर्मसु कौशलम्" (अध्याय 2, श्लोक 50) — अर्थात् कार्यों में कुशलता ही योग है। "समत्वं योग उच्यते" (अध्याय 2, श्लोक 48) — समभाव ही योग है। हर व्यक्ति की अभिरुचि और स्वभाव अलग होते हैं, इसलिए गीता मुक्ति के लिए एक नहीं, बल्कि चार अलग-अलग परंतु परस्पर-पूरक मार्ग सुझाती है।

| योग                          | मुख्य सिद्धांत व श्लोक                                                                                                                                                                                                                                   | प्रशासनिक उपयोग                                                                                                                                                                                                                       |
|------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. ज्ञान योग (अध्याय 4, 5-6) | बुद्धि और तर्क का मार्ग। "विद्या ददाति विनयम्" (हितोपदेश) — ज्ञान विनम्रता देता है। ज्ञानी अपनी इंद्रियों को कछुए की तरह समेट लेता है ("संहरते कूर्मोऽङ्गानीव")।                                                                                         | संविधान, BNS और आचार संहिता (Code of Conduct) का गहन ज्ञान; अतिथि-व्याख्यान, उच्च-अध्ययन व सहयोग (Collaboration); CPGRAMS (केंद्र सरकार की ऑनलाइन लोक-शिकायत निवारण प्रणाली) जैसी व्यवस्थाओं से जनसमस्याओं का सही ज्ञान प्राप्त करना। |
| 2. कर्म योग (अध्याय 3, 18)   | निःस्वार्थ कर्म का मार्ग। "नियतं कुरु कर्म त्वम्" — अपना नियत कर्तव्य करो। "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः" — अपने-अपने कर्म में तत्पर रहकर ही व्यक्ति सिद्धि पाता है (विवेकानंद, गांधी, तिलक जैसे विचारकों द्वारा विशेष रूप से व्याख्यायित)। | लालफीताशाही, निष्क्रियता व अकुशलता से लड़ना; मिशन कर्मयोगी, 360-डिग्री मूल्यांकन (वरिष्ठ, सहकर्मी व अधीनस्थ — सबकी राय से), ई-गवर्नेंस।                                                                                               |
| 3. भक्ति योग (अध्याय 12)     | पूर्ण समर्पण का मार्ग। "पत्रं पुष्पं फलं तोयम्" (9.26) — छोटी सी भेंट भी अगर सच्चे प्रेम व श्रद्धा से दी जाए तो स्वीकार्य है (रामानुजाचार्य व इस्कॉन जैसी परंपराओं द्वारा विशेष रूप से व्याख्यायित)।                                                     | न्यूनतम संसाधनों में भी बदलाव लाना — जैसे सामूहिक जन-सहयोग जुटाकर किया गया कोई सामुदायिक कार्य; संविधान के प्रति अगाध निष्ठा।                                                                                                         |
| 4. राज योग (अध्याय 6)        | ध्यान व प्राणायाम के ज़रिए आत्म-नियंत्रण का मार्ग — श्वास के नियमन (प्राण-अपान — साँस लेना और छोड़ना, 4.29) पर आधारित।                                                                                                                                   | मानसिक स्वास्थ्य व तनाव-प्रबंधन; राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में योग को दिया गया स्थान।                                                                                                                                             |

### गीता के चार योग — चार स्वभाव, एक लक्ष्य

#### मुक्ति / पूर्णता

##### ज्ञान योग

बौद्धिक स्वभाव — विवेक, तर्क

##### कर्म योग

कर्मठ स्वभाव — निष्काम सेवा

##### भक्ति योग

भावुक स्वभाव — समर्पण, प्रेम

##### ध्यान (राज) योग

आत्मनिरीक्षक स्वभाव — मन-संयम

चित्र 4.13: गीता के चार योग — चार स्वभाव, एक लक्ष्य

#### ☀ कहानी — जब एक IAS अधिकारी ने भक्ति-भाव से जन-सहयोग जुटाकर सड़क बनवा दी

मणिपुर के एक IAS अधिकारी आर्मस्ट्रांग पेम ने अपने क्षेत्र में सड़क-निर्माण के लिए सरकारी बजट की प्रतीक्षा करने के बजाय, सोशल मीडिया (फेसबुक) के ज़रिए लोगों से सीधा आह्वान किया। उनकी अपील से प्रेरित होकर देश-विदेश से लगभग ₹40 लाख का जन-सहयोग जुटा, और स्थानीय समुदाय ने मिलकर लगभग 100 किलोमीटर लंबी सड़क बना डाली — जिसे 'पीपल्स रोड' (जनता की सड़क) के नाम से जाना जाता है। यह कहानी दिखाती है कि भक्ति योग जैसा समर्पण-भाव — यहाँ समुदाय के प्रति समर्पण के रूप में — किस तरह न्यूनतम संसाधनों में भी असाधारण बदलाव ला सकता है।

💡 तीनों योगों की अनिवार्य एकता: स्वामी विवेकानंद के अनुसार ज्ञान, कर्म और भक्ति — तीनों योग एक-दूसरे के पूरक हैं, अलग-थलग नहीं। ज्ञान के बिना भक्ति अंधविश्वास बन सकती है, और ज्ञान के बिना किया गया कर्म 'विकर्म' — यानी बिना दिशा व उद्देश्य का यादृच्छिक (Random) कार्य बन सकता है। वहीं कर्म के बिना केवल ज्ञान को एक प्रसिद्ध कहावत के ज़रिए समझाया जाता है — 'वेद ढोने वाला गधा' — यानी सिर्फ ग्रंथ पढ़ लेने भर से कोई ज्ञानी नहीं बन जाता, उसे आचरण में भी उतारना पड़ता है। गीता अध्याय 12, श्लोक 12 के अनुसार — ज्ञान से बढ़कर ध्यान है, और ध्यान से बढ़कर कर्मफल का त्याग है, क्योंकि त्याग से तुरंत शांति मिलती है।

### 7.1 आदर्श भक्त के लक्षण — करुणामय प्रशासन का आधार (अध्याय 12)

गीता के बारहवें अध्याय (श्लोक 13-19) में भगवान कृष्ण बताते हैं कि उन्हें कैसा भक्त प्रिय है। ये लक्षण किसी भी धर्म से परे, एक संवेदनशील और करुणामय प्रशासक के लक्षण भी हैं:

“ जो किसी भी प्राणी से द्वेष नहीं करता, सबका मित्र है, करुणामय है, ममता और अहंकार से रहित है, सुख-दुःख में समान रहता है और क्षमाशील है — वह मुझे प्रिय है। (अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी॥) ” — भगवद्गीता 12.13

- ◆ **अद्वेष्टा (द्वेष-रहित):** किसी शिकायतकर्ता, आलोचक या विरोधी से भी व्यक्तिगत द्वेष न रखना।
- ◆ **मैत्रः करुणः (मित्रवत् और करुणामय):** नागरिक को "फ़ाइल" नहीं, बल्कि एक इंसान के रूप में देखना।
- ◆ **निर्ममो निरहङ्कारः (ममता और अहंकार से मुक्त):** पद को अपनी निजी संपत्ति न समझना और "मैं साहब हूँ" का अहंकार न रखना।
- ◆ **यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः (12.15):** जिससे लोग परेशान न हों, और जो लोगों से परेशान न हो — यह जनता के साथ आदर्श संबंध का सबसे सुंदर सूत्र है।

कुछ आधुनिक टिप्पणीकार कर्मयोग की तुलना समाजवादी/साम्यवादी विचारधारा में वर्णित 'निःस्वार्थ मानव' की अवधारणा से भी करते हैं — यह एक विद्वत्तापूर्ण तुलना है, न कि कार्ल मार्क्स का स्वयं गीता पर दिया गया कोई प्रत्यक्ष कथन; अध्ययन में इसे 'कुछ विद्वानों द्वारा की गई तुलना' कहकर ही प्रस्तुत करना उचित रहेगा।

हर योग को एक श्लोक, उसके हिंदी अर्थ और उसके प्रशासनिक अनुप्रयोग के साथ समझना सबसे प्रभावी तरीका है। चारों योगों को केवल सूची के रूप में नहीं, बल्कि चार व्यक्तित्व-प्रकारों (बौद्धिक, कर्मठ, भावुक, आत्मनिरीक्षक) के मार्ग के रूप में समझना चाहिए — यही समझ इस विषय को गहराई देती है।

## 8. प्रवृत्ति-निवृत्ति, योगक्षेम और आपद धर्म

### 8.1 प्रवृत्ति और निवृत्ति

| प्रवृत्ति धर्म (Pravritti)                                                                                | निवृत्ति धर्म (Nivritti)                                                                                         |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ◆ सांसारिक जीवन व सक्रियता की ओर — जिसे गीता (18.30) में निवृत्ति के साथ विवेक से समझने की बात कही गई है। | ◆ सांसारिक लक्ष्यों व मोह-माया से क्रमिक विरक्ति।                                                                |
| ◆ सत्ता, यश व धन पाने की स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति।                                                      | ◆ धर्म व आत्मिक नैतिकता को अपने जीवन का केंद्र बनाना।                                                            |
| ◆ एक सक्रिय सामाजिक सदस्य के रूप में जीवन जीना।                                                           | ◆ आत्मिक लक्ष्य (आत्म-साक्षात्कार) की ओर उन्मुख होना।                                                            |
| ◆ प्रथम दो आश्रम — ब्रह्मचर्य व गृहस्थ — इसी से जुड़े हैं। कर्म योग का मार्ग — लोकसंग्रह की ओर उन्मुख।    | ◆ अंतिम दो आश्रम — वानप्रस्थ व संन्यास — इससे जुड़े हैं। ज्ञान योग का मार्ग — त्याग (Renunciation) की ओर उन्मुख। |

### प्रवृत्ति बनाम निवृत्ति — और गीता का संतुलन

| प्रवृत्ति         | गीता           | निवृत्ति              |
|-------------------|----------------|-----------------------|
| संसार, सक्रियता   | दिशा           | विरक्ति, त्याग        |
| लोभ, सत्ता-मोह    | खतरा           | पलायन, अकर्मण्यता     |
| कर्म करो          | गीता का मार्ग  | पर आसक्ति छोड़ो       |
| पूरी ऊर्जा से काम | प्रशासक के लिए | पद-लाभ से निर्लिप्तता |

चित्र 4.14: प्रवृत्ति बनाम निवृत्ति — और गीता का संतुलन

### 8.2 योगक्षेम (Yog Kshem) — भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) का आदर्श वाक्य

#### ☀ मूल श्लोक

"योगक्षेमं वहाम्यहम्" (अध्याय 9, श्लोक 22) — योग = अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति करना (अप्राप्तस्य प्रापणम्), क्षेम = प्राप्त वस्तु की रक्षा करना (प्राप्तस्य रक्षणम्), वहाम्यहम् = मैं वहन करता हूँ। अर्थात्, भगवान् अपने सच्चे भक्त के लिए जो कमी है उसे पूरा करते हैं और जो प्राप्त है उसकी रक्षा करते हैं।

- ◆ यही श्लोक भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) के आदर्श वाक्य के रूप में अपनाया गया है — क्योंकि बीमा भी ठीक यही दो काम करता है: भविष्य की कमी को पूरा करना और वर्तमान बचत/संपत्ति की रक्षा करना।
- ◆ किसी RAS/RPS अधिकारी के लिए इसका व्यावहारिक अर्थ है — अपने क्षेत्र में कानून-व्यवस्था व नागरिकों की संपत्ति की रक्षा करना (क्षेम) तथा कल्याणकारी योजनाओं के ज़रिए ज़रूरतमंदों तक नई सुविधाएँ पहुँचाना (योग) — जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना, श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (राजस्थान में सस्ती दरों पर पौष्टिक भोजन) जैसी योजनाएँ, तथा 'नेकी की दीवार' (शीतकालीन वस्त्र-वितरण) जैसी नवाचारी पहलें।

## योगक्षेम — कल्याणकारी राज्य के दो काम

| योग (अप्राप्त की प्राप्ति) | राज्य    | क्षेम (प्राप्त की रक्षा)        |
|----------------------------|----------|---------------------------------|
| जो नहीं है, वह देना        | अर्थ     | जो है, उसे बचाना                |
| आवास, भोजन, शिक्षा योजनाएँ | उदाहरण   | कानून-व्यवस्था, संपत्ति-सुरक्षा |
| भविष्य की कमी पूरी करना    | बीमा में | वर्तमान बचत की रक्षा            |

चित्र 4.15: योगक्षेम — कल्याणकारी राज्य के दो काम

### 8.3 योगक्षेम और भारतीय सुशासन की परंपरा

गीता का "योगक्षेम" भारतीय सुशासन-परंपरा के एक बड़े सूत्र का हिस्सा है। कौटिल्य के **अर्थशास्त्र** में भी राजा का धर्म (राजधर्म) प्रजा का योगक्षेम बताया गया है — "प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्" — प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही उसका हित। नीचे की तालिका दिखाती है कि भारतीय ग्रंथों में सुशासन के विचार किस तरह फैले हुए हैं:

| स्रोत                                           | सुशासन का सूत्र                                               | आज का रूप                                                |
|-------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------|
| बृहदारण्यक उपनिषद्                              | धर्म (न्याय) की रक्षा सर्वोपरि                                | विधि का शासन                                             |
| मुंडक उपनिषद्                                   | "सत्यमेव जयते" — सत्य की ही विजय                              | राष्ट्रीय आदर्श वाक्य, पारदर्शिता                        |
| रामायण                                          | रामराज्य — कोई भूखा न रहे, कोई भेदभाव न हो                    | खाद्य सुरक्षा, समानता                                    |
| भगवद्गीता                                       | अधिष्ठान — शासन में ज़िम्मेदारी और स्थिरता; योगक्षेम          | जवाबदेह संस्थाएँ, कल्याणकारी राज्य                       |
| अथर्ववेद (भूमि सूक्त)                           | प्रकृति के साथ सामंजस्य                                       | सतत विकास, मिशन लाइफ़ (पर्यावरण-अनुकूल जीवन-शैली अभियान) |
| तिरुक्कुरल (संत तिरुवल्लुवर का तमिल नीति-ग्रंथ) | सामाजिक विकास, संसाधनों का नियमन                              | संसाधन-प्रबंधन                                           |
| कौटिल्य का अर्थशास्त्र                          | योगक्षेम — नागरिक-कल्याण राजा का कर्तव्य                      | मनरेगा, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, आयुष्मान भारत           |
| अशोक का धम्म                                    | अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक सद्भाव को राज्य-नीति बनाना | धर्मनिरपेक्ष, कल्याणकारी शासन                            |
| गांधी — अंत्योदय                                | सबसे कमज़ोर व्यक्ति का कल्याण, सर्वोदय की भावना में           | लक्षित कल्याणकारी योजनाएँ                                |

**अशोक का धम्म** — **प्राचीन नैतिक शासन का प्रमाण**: तीसरी शताब्दी ई.पू. के अशोक के अभिलेख इस बात के प्रामाणिक साक्ष्य हैं कि कलिंग युद्ध के बाद उन्होंने **धम्म** — अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक सद्भाव की नैतिक संहिता — के आधार पर शासन किया। उनके अधिकारी (धम्म-महामात्र) इन मूल्यों का प्रसार करते थे और सभी प्रजा के कल्याण का लक्ष्य रखते थे। यह सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों को राज्य-नीति में उतारने का बहुत पुराना और गहरा उदाहरण है — ठीक वैसे ही, जैसे गीता "राजर्षि" (4.2) की कल्पना करती है — यानी ऐसा शासक जो राजा की तरह सक्रिय होकर प्रजा का कल्याण करे और ऋषि की तरह संयमी व निःस्वार्थ रहे (इसका विस्तार नीचे खंड 8.3 के अंत में है)।

### 8.4 आपद धर्म (Apad Dharma)

#### आसान परिभाषा: आपद धर्म (Apad Dharma)

**परिभाषा:** विपत्ति, संकट या असाधारण परिस्थिति में सामान्य नियमों से हटकर, स्थिति की मांग के अनुसार असाधारण या लचीले कदम उठाने का सिद्धांत — इसे संस्कृत की एक प्रचलित सूक्ति "आपत्काले परो धर्मः" के माध्यम से भी समझाया जाता है (संकट के समय, कठिनतम परिस्थिति की माँग ही सर्वोच्च धर्म बन जाती है); ध्यान रहे — यह उक्ति सामान्य धर्मशास्त्र-परंपरा से जुड़ी एक व्यापक रूप से उद्धृत सूक्ति है, गीता का कोई विशिष्ट, प्रमाणित अध्याय-श्लोक नहीं।

**आसान भाषा में:** जैसे किसी सामान्य दिन में अस्पताल में सिर्फ डॉक्टर ही मरीज़ का इलाज करते हैं, पर भूकंप जैसी आपदा में जो भी प्राथमिक चिकित्सा जानता हो, उसे तुरंत मदद के लिए आगे आना चाहिए — यही परिस्थिति के अनुसार अपने कर्तव्य का दायरा बढ़ाना है।   
**उदाहरण:** बूंदी (राजस्थान) के तत्कालीन कलेक्टर डॉ. रवींद्र गोस्वामी — जो पेशे से MBBS डॉक्टर भी हैं — ने सरकारी डॉक्टरों की हड़ताल के दौरान अपनी प्रशासनिक भूमिका से आगे बढ़कर स्वयं मरीज़ों का इलाज किया; इसी तरह, 2018 की केरल बाढ़ के दौरान वायनाड के एक राहत-शिविर में IAS अधिकारी एम.जी. राजामणिकम् (उस समय आपदा-प्रबंधन के विशेष अधिकारी, पहले एर्णाकुलम के ज़िला कलेक्टर रह चुके) ने औपचारिक प्रोटोकॉल से आगे बढ़कर राहत-कार्य में स्वयं हिस्सा लिया — 13 अगस्त 2018 की रात जब थके हुए कर्मचारी ट्रक से राहत-सामग्री नहीं उतार पा रहे थे, तब उन्होंने वायनाड के उप-कलेक्टर के साथ खुद चावल के बोरे कंधे पर उठाकर उतारे — दोनों उदाहरण आपद धर्म को व्यवहार में दर्शाते हैं।

## कहानी: "ऑक्सीजन की आधी रात" — नियम, संकट और विवेक

महामारी की दूसरी लहर के दिन थे। एक ज़िला अस्पताल के ऑक्सीजन-टैंक में केवल चार घंटे की ऑक्सीजन बची थी और भर्ती थे 140 मरीज़। अगली आपूर्ति सुबह आठ बजे से पहले संभव नहीं थी। रात साढ़े ग्यारह बजे ज़िला कलेक्टर विक्रांत (काल्पनिक नाम) के पास अस्पताल अधीक्षक का घबराया हुआ फ़ोन आया।

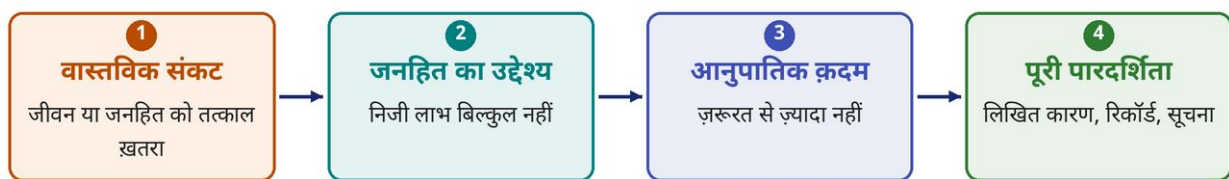
ज़िले के औद्योगिक क्षेत्र में एक इस्पात-इकाई के पास औद्योगिक ऑक्सीजन के भरे सिलेंडरों का भंडार था। सामान्य नियमों में किसी निजी इकाई का माल अपने अधिकार में लेने के लिए लंबी प्रक्रिया, उच्च स्तर की अनुमति और मूल्यांकन ज़रूरी था। इकाई के मालिक ने फ़ोन पर कहा — "बिना लिखित आदेश के मैं एक सिलेंडर नहीं दूँगा, कल मेरा अपना उत्पादन रुक जाएगा।" विक्रांत के सामने दुविधा थी — प्रक्रिया का पालन करें तो मरीज़ों की जान जा सकती है; प्रक्रिया लाँघें तो बाद में जाँच और आरोप।

विक्रांत ने आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत ज़िला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अध्यक्ष के रूप में अपनी शक्तियों का सहारा लिया। उन्होंने तत्काल लिखित आदेश जारी किया, जिसमें कारण, सिलेंडरों की संख्या और बाद में भुगतान का आश्वासन दर्ज था; पूरी प्रक्रिया की वीडियो-रिकॉर्डिंग करवाई; राज्य के मुख्य सचिव कार्यालय को रात में ही ई-मेल से सूचना दी; और चिकित्सा-विशेषज्ञ से यह प्रमाणित करवाया कि औद्योगिक सिलेंडरों को सुरक्षित रूप से चिकित्सा-उपयोग में कैसे लाया जाए। सुबह होते ही इकाई को बाज़ार दर पर भुगतान की प्रक्रिया शुरू कर दी गई।

उस रात एक भी मरीज़ ऑक्सीजन की कमी से नहीं मरा। बाद में हुई जाँच में विक्रांत का निर्णय उचित पाया गया, क्योंकि हर क़दम लिखित, आनुपातिक (Proportionate), पारदर्शी और जनहित में था। इकाई-मालिक ने भी बाद में ज़िला प्रशासन को स्वेच्छा से और सिलेंडर दान किए। प्रशिक्षण में विक्रांत अक्सर कहते — "आपद धर्म का अर्थ नियम तोड़ना नहीं, संकट में नियम की आत्मा को बचाना है — और हर क़दम का हिसाब रखना है।"

**इस कहानी से सीख:** आपद धर्म असाधारण परिस्थितियों में विवेकाधिकार के उचित प्रयोग की शिक्षा देता है — पर उसकी चार शर्तें हैं: वास्तविक संकट, जनहित का उद्देश्य, आनुपातिक क़दम और पूरी पारदर्शिता (लिखित कारण, रिकॉर्ड, उच्च अधिकारियों को सूचना)। इन शर्तों के बिना "आपद धर्म" मनमानी का बहाना बन सकता है।

### आपद धर्म — विवेकाधिकार की चार कसौटियाँ



चित्र 4.16: आपद धर्म — विवेकाधिकार की चार कसौटियाँ

**समत्व योग और राजर्षि:** 'राजर्षि' शब्द 'राजा' और 'ऋषि' के मेल से बना है — राजा निःस्वार्थता व कर्तव्यनिष्ठा दिखाता है, जबकि ऋषि दिव्यता व आत्म-संयम का प्रतीक है। गीता एक आदर्श प्रशासक को इन्हीं दोनों गुणों को साथ लेकर चलने वाला 'राजर्षि' बनने की प्रेरणा देती है। "समत्वं योग उच्यते" — समभाव ही योग है, और यही समानता व गैर-पक्षपात (Non-Partisanship) का दार्शनिक आधार भी है।

**आपद धर्म और संकट-प्रबंधन:** संकट-प्रबंधन में विवेकाधिकार (Discretion) के उचित प्रयोग को समझने के लिए आपद धर्म सबसे उपयुक्त सिद्धांत है। ऊपर (और अध्याय 03 में) दिए गए बूंदी (कलेक्टर द्वारा स्वयं मरीज़ देखना) और वायनाड (बाढ़ में IAS अधिकारी का स्वयं राहत-कार्य करना) के उदाहरण दिखाते हैं कि महाभारत-परंपरा का यह 2000+ साल पुराना सिद्धांत आज भी व्यावहारिक प्रशासन में कितना प्रासंगिक है।

## 9. वर्ण व्यवस्था (Varna Vyavastha) — गुण और कर्म पर आधारित

### मूल श्लोक

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।" (अध्याय 4, श्लोक 13) — अर्थात्, मैंने (भगवान कृष्ण ने) गुणों (स्वभाव) और कर्मों (व्यवसाय) के आधार पर चार वर्ण बनाए हैं।

गीता के इस श्लोक में वर्ण-विभाजन का आधार गुण व कर्म बताया गया है, जन्म नहीं। यह ध्यान देने योग्य है कि यह गीता का सैद्धांतिक/आदर्श कथन है — ऐतिहासिक रूप से भारतीय समाज में यह व्यवस्था व्यवहार में प्रायः जन्म-आधारित जाति-व्यवस्था (Caste System) में बदल गई, जो कालांतर में सामाजिक भेदभाव का कारण भी बनी। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति' (Revolution and Counter-Revolution in Ancient India) में गीता की इस अवधारणा की आलोचना करते हुए यह सवाल उठाया था कि क्या यह सिद्धांत व्यवहार में जन्म-आधारित असमानता को उचित ठहराने का एक औज़ार बन गया (इस आलोचना का विस्तृत विवेचन अध्याय 02 में किया गया है)। अध्ययन में दोनों पक्ष — गीता का 'गुण-कर्म आधारित' आदर्श कथन, और इसके ऐतिहासिक दुरुपयोग की आलोचना — साथ रखना एक संतुलित (Balanced) दृष्टिकोण दर्शाता है।

| वर्ण                        | प्रमुख गुण (भावार्थ)                                          | आधुनिक प्रशासनिक समकक्ष (केवल भाव-साम्य हेतु) |
|-----------------------------|---------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------|
| ब्राह्मण (अध्याय 18, श्लोक) | मन-शांति, इंद्रिय-नियंत्रण, तप, शुद्धि, क्षमा, ज्ञान व विवेक। | सिविल सेवक, न्यायाधीश, शोधकर्ता, शिक्षक।      |

| वर्ण                           | प्रमुख गुण (भावार्थ)                              | आधुनिक प्रशासनिक समकक्ष (केवल भाव-साम्य हेतु) |
|--------------------------------|---------------------------------------------------|-----------------------------------------------|
| 42)                            |                                                   |                                               |
| क्षत्रिय (अध्याय 18, श्लोक 43) | वीरता, तेज, दृढ़ता, कौशल, नेतृत्व, उदारता।        | सशस्त्र सेनाएँ, पुलिस (IPS/RPS), कलेक्टर।     |
| वैश्य (अध्याय 18, श्लोक 44)    | कृषि, पशुपालन व व्यापार — रजोगुण-प्रधान स्वभाव।   | व्यवसायी, व्यापारी, किसान।                    |
| शूद्र (अध्याय 18, श्लोक 44)    | सेवा-कार्य — इसमें तमोगुण की प्रधानता बताई गई है। | कुशल कामगार, सेवा-प्रदाता।                    |

 **ध्यान रहे:** ऊपर दिया गया 'आधुनिक समकक्ष' कॉलम केवल गुण-आधारित भाव-साम्य दिखाने के लिए है, न कि यह दावा करने के लिए कि आज की कोई पेशेवर श्रेणी किसी वर्ण के 'बराबर' है — जन्म-आधारित वर्गीकरण का कोई भी व्यावहारिक रूप संविधान द्वारा निषिद्ध है।

**गांधीजी की व्याख्या:** महात्मा गांधी ने वर्ण को ऊँच-नीच की व्यवस्था नहीं, बल्कि कर्तव्यों के विभाजन के रूप में देखा, और स्पष्ट कहा कि किसी भी काम को छोटा या बड़ा मानना और किसी को जन्म के आधार पर अछूत मानना पूरी तरह अधर्म है। भारतीय संविधान ने अनुच्छेद 17 के द्वारा अस्पृश्यता का उन्मूलन करके और अनुच्छेद 14-16 के द्वारा अवसर की समानता देकर इसी गुण-कर्म आधारित, जन्म-निरपेक्ष समानता को कानूनी रूप दिया।

## 9.1 प्रशासनिक अनुप्रयोग

- ◆ गुण-कर्म आधारित चयन की भावना — संघ लोक सेवा आयोग और राजस्थान लोक सेवा आयोग जैसी संस्थाओं द्वारा योग्यता-आधारित (Merit-based) चयन में झलकती है।
- ◆ श्रम-विभाजन (Division of Labor) का आधुनिक रूप — कौशल भारत (Skill India), प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) और मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं में दिखता है — इनमें व्यक्ति को उसके जन्म के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी रुचि और प्रशिक्षण से विकसित कौशल के आधार पर काम मिलता है, जो गुण-कर्म आधारित विभाजन की ही आधुनिक भावना है।
- ◆ अनुच्छेद 14, 15, 16, 17, 21A, 46 — सामाजिक न्याय और अवसर की समानता सुनिश्चित करने वाले संवैधानिक प्रावधान। अनुच्छेद 14 सबको कानून के समक्ष समानता देता है, 15 जाति-धर्म आदि के आधार पर भेदभाव रोकता है, 16 सरकारी नौकरियों में अवसर की समानता देता है, 17 अस्पृश्यता का अंत करता है, 21A 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है, और 46 राज्य को अनुसूचित जातियों, जनजातियों व कमज़ोर वर्गों के शैक्षिक-आर्थिक हितों को बढ़ाने का निर्देश देता है।
- ◆ हाथ से मैला ढोने की प्रथा (निषेध) अधिनियम, 2013 — जन्म-आधारित भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कानून, क्योंकि यह अमानवीय काम सदियों तक कुछ जातियों पर केवल जन्म के आधार पर थोपा गया था; यह कानून ऐसे काम पर रोक लगाकर उनके पुनर्वास की व्यवस्था करता है।

## 10. त्रिगुण (Three Gunas) — सत्त्व, रजस, तमस

### मूल श्लोक

"सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।" (अध्याय 14, श्लोक 5) — अर्थात्, सत्त्व (शुद्धता), रजस (कार्य-आसक्ति/जुनून) और तमस (अज्ञान/जड़ता) — ये तीन गुण प्रकृति से उत्पन्न होते हैं और हर व्यक्ति में अलग-अलग अनुपात में विद्यमान रहते हैं।

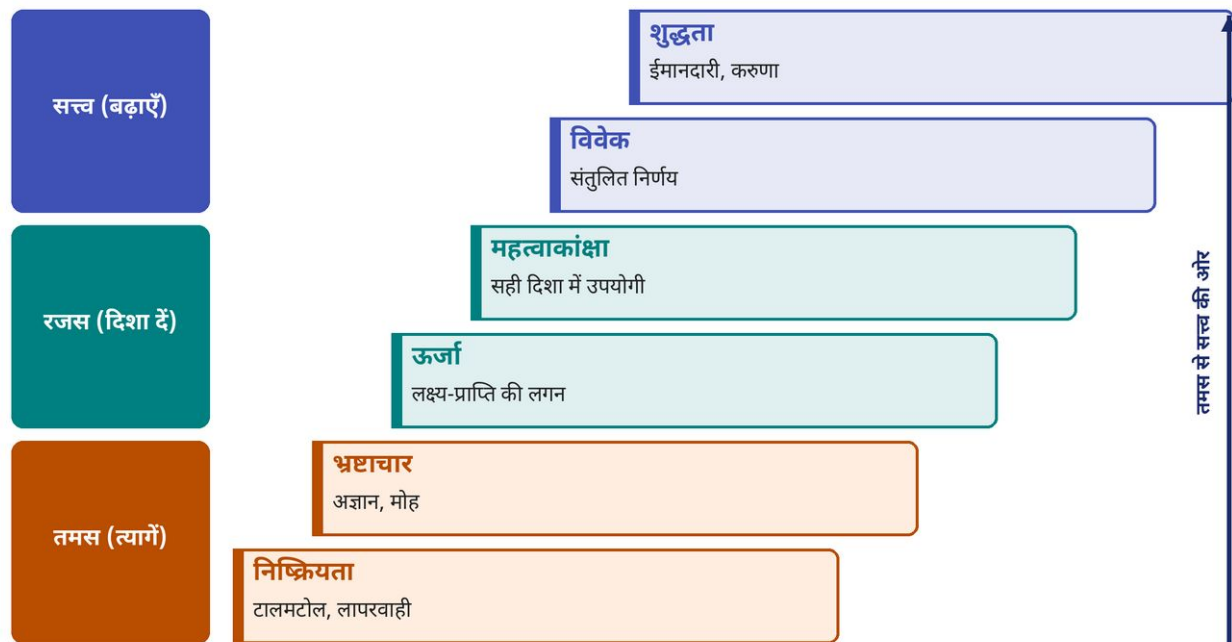
| गुण               | स्वभाव                                                                                                          | प्रशासनिक प्रभाव                                                                                                          |
|-------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| सत्त्व (Sattva)   | ज्ञान, पवित्रता व सुख का प्रतीक — प्रकाश जैसा। "सत्त्वं सुखे सञ्जयति" — सत्त्व गुण व्यक्ति को सुख से जोड़ता है। | सूचित निर्णय-क्षमता (Informed Decision-making), सत्यनिष्ठा, नैतिक शासन।                                                   |
| रजस (Rajas)       | लालसा व कार्य के प्रति आसक्ति का प्रतीक। "रजः कर्मणि" — रजोगुण व्यक्ति को कर्म की ओर प्रेरित करता है।           | कार्य-उन्मुख (Action-oriented) तेज़ निर्णय व जोखिम उठाने की क्षमता — सकारात्मक दिशा में प्रयुक्त होने पर उत्कृष्ट परिणाम। |
| तमस (Tamas)       | अज्ञान, आलस्य व मोह का प्रतीक। "ज्ञानमावृत्य तु तमः" — तमोगुण ज्ञान को ढक देता है।                              | प्रशासनिक निष्क्रियता (Apathy), लालफीताशाही, भ्रष्टाचार व अकर्मण्यता।                                                     |
| गुणातीत (Gunatit) | तीनों गुणों से ऊपर उठी हुई अवस्था — सुख-दुःख, प्रशंसा-निंदा में समभाव — स्थितप्रज्ञ जैसी अवस्था।                | एक आदर्श, संतुलित प्रशासक का अंतिम लक्ष्य।                                                                                |

### आसान परिभाषा: त्रिगुण (Three Gunas)

 **परिभाषा:** सांख्य दर्शन और गीता के अनुसार प्रकृति के तीन मूल गुण — सत्त्व (ज्ञान, शुद्धता, संतुलन), रजस (क्रियाशीलता, इच्छा, महत्वाकांक्षा) और तमस (जड़ता, आलस्य, अज्ञान) — जो हर व्यक्ति में अलग-अलग अनुपात में रहते हैं और उसके विचार, आचरण व निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

 **आसान भाषा में:** हर इंसान में तीन तरह की ऊर्जा होती है — समझदारी वाली (सत्त्व), दौड़-भाग वाली (रजस) और सुस्ती वाली (तमस); जिसकी मात्रा ज़्यादा, वैसा ही व्यक्ति का स्वभाव।  **उदाहरण:** परीक्षा से पहले एक छात्र जो योजना बनाकर शांति से पढ़ता है (सत्त्व), एक

## त्रिगुण — प्रशासक की चढ़ाई



चित्र 4.17: त्रिगुण — प्रशासक की चढ़ाई

**प्रशासनिक मार्गदर्शन:** गीता का संदेश है — एक प्रशासक को तमोगुण (निष्क्रियता, भ्रष्टाचार) का पूर्ण त्याग करना चाहिए, रजोगुण का उपयोग सकारात्मक दिशा में (कार्य-कुशलता के लिए) करना चाहिए, और सत्त्वगुण (ज्ञान, नैतिकता) को निरंतर बढ़ाना चाहिए — अंतिम लक्ष्य है 'गुणातीत' अवस्था प्राप्त करना, जो स्थितप्रज्ञ अवस्था से मेल खाती है।

**त्रिगुण का संतुलित दृष्टिकोण:** किसी एक गुण को 'पूरी तरह बुरा' मानना ठीक नहीं — रजोगुण सही दिशा में बहुत उपयोगी भी है। गीता की मूल शिक्षा 'संतुलन और सही दिशा' की है: तमस को घटाना, रजस को सही दिशा देना और सत्त्व को बढ़ाना।

### 10.1 तीन प्रकार की बुद्धि — प्रशासनिक निर्णय की गीता-कसौटी (अध्याय 18)

त्रिगुण का सबसे व्यावहारिक उपयोग गीता के अठारहवें अध्याय में मिलता है, जहाँ बुद्धि (निर्णय-क्षमता) को भी तीन प्रकार का बताया गया है। एक अधिकारी का हर निर्णय इन्हीं तीन में से किसी एक बुद्धि से निकलता है:

**“ जो बुद्धि प्रवृत्ति और निवृत्ति, करने योग्य और न करने योग्य, भय और अभय, बंधन और मोक्ष — इन सबको ठीक-ठीक जानती है, वह सात्त्विक बुद्धि है। (प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये। बन्धं मोक्षं च या वेति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥) ” — भगवद्गीता 18.30**

| बुद्धि            | गीता के अनुसार पहचान                                     | प्रशासन में रूप                                                |
|-------------------|----------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------|
| सात्त्विक (18.30) | कर्तव्य-अकर्तव्य और भय-अभय को ठीक-ठीक जानती है           | तथ्य, नियम और जनहित पर आधारित संतुलित निर्णय                   |
| राजसिक (18.31)    | धर्म-अधर्म और कर्तव्य-अकर्तव्य को अधूरा या ग़लत समझती है | जल्दबाज़ी, दबाव या महत्वाकांक्षा में लिया गया आधा-अधूरा निर्णय |
| तामसिक (18.32)    | अज्ञान से ढकी — अधर्म को धर्म और हर बात को उलटा समझती है | स्वार्थ या पूर्वाग्रह से लिया गया पूरी तरह ग़लत निर्णय         |

### 10.2 कर्म के पाँच कारण — सामूहिक ज़िम्मेदारी का सिद्धांत (18.14)

गीता कहती है कि कोई भी कर्म केवल एक व्यक्ति से पूरा नहीं होता — उसके **पाँच कारण** होते हैं: "अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्। विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥" यह सिद्धांत प्रशासन में बहुत काम का है — किसी योजना की सफलता या विफलता का श्रेय या दोष केवल एक अधिकारी पर डालना ठीक नहीं; संस्था, व्यक्ति, साधन, प्रयास और परिस्थिति — पाँचों को देखना चाहिए। श्लोक के पाँच शब्द यही बताते हैं: अधिष्ठान (आधार — संस्था और क़ानूनी ढाँचा), कर्ता (काम करने वाला व्यक्ति), करण (साधन — बजट, तकनीक, उपकरण), चेष्टा (अलग-अलग प्रयास) और दैव (पाँचवाँ कारण — ऐसी परिस्थितियाँ जो किसी के नियंत्रण में नहीं, जैसे मौसम या आपदा)।

## कर्म के पाँच कारण — गीता 18.14 का प्रशासनिक रूप

### कोई भी कर्म / योजना

|                                                |                                               |                                        |                                             |                                                 |
|------------------------------------------------|-----------------------------------------------|----------------------------------------|---------------------------------------------|-------------------------------------------------|
| <b>अधिष्ठान</b><br>आधार — संस्था, कानूनी ढाँचा | <b>कर्ता</b><br>करने वाला — अधिकारी, कर्मचारी | <b>करण</b><br>साधन — बजट, तकनीक, उपकरण | <b>चेष्टा</b><br>विविध प्रयास — क्रियान्वयन | <b>दैव</b><br>अनियंत्रित परिस्थिति — मौसम, आपदा |
|------------------------------------------------|-----------------------------------------------|----------------------------------------|---------------------------------------------|-------------------------------------------------|

चित्र 4.18: कर्म के पाँच कारण — गीता 18.14 का प्रशासनिक रूप

### 10.3 वाणी का तप और तीन प्रकार का दान (अध्याय 17)

“ जो वचन किसी को उद्धिग्न न करे, सत्य हो, प्रिय हो और हितकारी हो, तथा स्वाध्याय का अभ्यास — यह वाणी का तप कहलाता है। (अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यासनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥) ” — भगवद्गीता 17.15

**वाणी के तप का प्रशासनिक अर्थ:** एक अधिकारी का हर शब्द — चाहे जनसुनवाई में हो, सूचना के अधिकार (RTI) के जवाब में हो या प्रेस-वार्ता में — चार कसौटियों पर खरा उतरना चाहिए: वह किसी को अनावश्यक आहत न करे, **सत्य** हो, **प्रिय** (शालीन) हो और **हितकारी** हो। कठोर सत्य भी शालीनता से कहा जा सकता है।

| दान का प्रकार            | गीता के अनुसार लक्षण                                                   | कल्याणकारी योजनाओं में अर्थ                                   |
|--------------------------|------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------|
| <b>सात्त्विक (17.20)</b> | कर्तव्य समझकर, बिना बदले की आशा के, सही स्थान, सही समय और सही पात्र को | सही लाभार्थी का चयन (लक्ष्यीकरण), समय पर और सम्मान के साथ लाभ |
| <b>राजसिक (17.21)</b>    | बदले की आशा से, फल के लिए या अनमने मन से                               | वोट या प्रचार के लिए दी गई सहायता                             |
| <b>तामसिक (17.22)</b>    | ग़लत स्थान, ग़लत समय, अपात्र को, अनादर और तिरस्कार के साथ              | अपात्र को लाभ, लाभार्थी का अपमान या देरी                      |

## त्रिगुण हर जगह — बुद्धि, दान और कर्ता

### त्रिगुण का विस्तार (अध्याय 17-18)

| सात्त्विक                                                                                                                                            | राजसिक                                                                                                                                           | तामसिक                                                                                                                                      |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <ul style="list-style-type: none"> <li>सही-ग़लत की स्पष्ट बुद्धि</li> <li>सही पात्र को सम्मान से दान</li> <li>आसक्ति-रहित, धैर्यवान कर्ता</li> </ul> | <ul style="list-style-type: none"> <li>अधूरी, उलझी बुद्धि</li> <li>बदले की आशा वाला दान</li> <li>फल का लालची, हर्ष-शोक में डूबा कर्ता</li> </ul> | <ul style="list-style-type: none"> <li>उलटी, अज्ञानी बुद्धि</li> <li>अपात्र को अनादर से दान</li> <li>आलसी, हठी, टालने वाला कर्ता</li> </ul> |

चित्र 4.19: त्रिगुण हर जगह — बुद्धि, दान और कर्ता

## 11. प्रशासनिक दुविधाओं का गीता से समाधान (8 नैतिक दुविधाएँ)

प्रशासनिक जीवन में अनेक नैतिक दुविधाएँ बार-बार उत्पन्न होती हैं। गीता के सिद्धांत इन दुविधाओं को सुलझाने के लिए एक व्यावहारिक ढाँचा देते हैं — नीचे आठ ऐसी दुविधाओं का विवेचन किया गया है।

| दुविधा                                                         | गीता का सरल संदेश                                                                             | प्रशासनिक उपयोग                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
|----------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. सिद्धांत बनाम आत्म-संरक्षण (Principle vs Self-Preservation) | "अकीर्तिः मरणात् अतिरिच्यते" (2.34) — सम्मानित व्यक्ति के लिए अपयश मृत्यु से भी बुरा है।      | किसी भी अधिकारी को जानलेवा खतरे में भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटना चाहिए — जैसे सत्येन्द्र दुबे (भारतीय अभियांत्रिकी सेवा के अधिकारी, जिनकी 2003 में बिहार के गया में हत्या कर दी गई) ने अपनी जान जाने के जोखिम के बावजूद राष्ट्रीय राजमार्ग में भ्रष्टाचार उजागर किया, अपने सिद्धांत से समझौता नहीं किया। |
| 2. कानून का अक्षर बनाम भावना (Letter vs Spirit of Law)         | "यथेच्छसि तथा कुरु" (18.63) — पूरा उपदेश देने के बाद कृष्ण अर्जुन से कहते हैं: इस पर गहराई से | विशेष परिस्थितियों में विवेकाधिकार (Discretion) का उचित प्रयोग — जैसे बूंदी कलेक्टर का हड़ताल के                                                                                                                                                                                                              |

| दुविधा                                                                       | गीता का सरल संदेश                                                                                                                                                                                                                                  | प्रशासनिक उपयोग                                                                                                                              |
|------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|                                                                              | विचार करो, फिर जो उचित लगे वैसा करो।                                                                                                                                                                                                               | दौरान स्वयं डॉक्टर बनकर मरीज़ देखना, नियम की भावना (Spirit) का सम्मान है।                                                                    |
| 3. व्यक्तिगत बनाम व्यावसायिक जीवन (Personal vs Professional)                 | "युक्ताहारविहारस्य ... युक्तस्वप्नावबोधस्य" (6.17) — जो खान-पान, कार्य और नींद में संयम रखता है, उसका योग उसके दुःखों का नाश करता है।                                                                                                              | कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance) — रात्रि-ड्यूटी के बावजूद एक अधिकारी को अपना शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना चाहिए।                 |
| 4. गति बनाम सटीकता (Speed vs Accuracy)                                       | "कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः। क्लैब्यं मा स्म गमः।" — अकर्मण्यता से कर्म श्रेष्ठ है, कायरता व दुर्बलता त्यागो।                                                                                                                                           | अत्यधिक सटीकता के नाम पर निष्क्रियता (Inaction) नहीं होनी चाहिए — लालफीताशाही व अनावश्यक विलंब से बचाव।                                      |
| 5. पक्षपात बनाम समान व्यवहार (Preferential vs Non-discrimination)            | "पण्डिताः समदर्शिनः" — ज्ञानी सबको समान दृष्टि से देखते हैं। "चातुर्वर्ण्यं गुणकर्मविभागशः" — वर्गीकरण गुण-कर्म पर आधारित, जन्म पर नहीं।                                                                                                           | भाई-भतीजावाद (Nepotism) व पक्षपात (Favoritism) से दूरी — अनुच्छेद 14, 15 के तहत समानता का पालन।                                              |
| 6. विकास बनाम पर्यावरणीय संतुलन (Development vs Sustainability)              | "भूमिरापोऽनलो वायुः खम्" (7.4) — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश — गीता इन्हें भगवान की ही 'प्रकृति' बताती है; इसलिए इनका आदर और इनमें संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।                                                                                  | विकास और पर्यावरण-संरक्षण के बीच संतुलन — सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) की भावना।                                       |
| 7. साध्य बनाम साधन (Ends vs Means)                                           | "धूमेनाग्निरिवावृताः" — जैसे आग धुएँ से ढकी रहती है, वैसे ही हर प्रयास में कोई-न-कोई दोष स्वाभाविक रूप से रहता है (18.48) — इसलिए किसी 'पूर्ण' परिणाम के लालच में गलत साधन अपनाने के बजाय, कमियों के बावजूद अपने उचित कर्तव्य-मार्ग पर चलना चाहिए। | अच्छे लक्ष्य (साध्य) के लिए भी उचित कर्तव्य-मार्ग (साधन) का त्याग नहीं करना चाहिए — गांधीजी के अनुसार साध्य और साधन दोनों पवित्र होने चाहिए। |
| 8. बाह्य जवाबदेही बनाम आंतरिक ज़िम्मेदारी (External vs Inner Accountability) | "शौचम्, स्थैर्यम्, आत्म-विनिग्रहः" (13.7) — मन-शरीर की पवित्रता, दृढ़ता और आत्म-संयम।                                                                                                                                                              | बाहरी निगरानी-तंत्र के साथ-साथ आंतरिक अंतरात्मा (Inner Conscience) से काम करना — अंततः विवेक ही सबसे भरोसेमंद मार्गदर्शक है।                 |

## आठ प्रशासनिक दुविधाएँ — गीता का समाधान

|                                                               |                                                        |                                                  |                                                       |
|---------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------|--------------------------------------------------|-------------------------------------------------------|
| <b>सिद्धांत बनाम आत्म-रक्षा</b><br>अकीर्ति: मरणात् अतिरिच्यते | <b>क़ानून का अक्षर बनाम भावना</b><br>यथेच्छसि तथा कुरु | <b>निजी बनाम व्यावसायिक</b><br>युक्ताहारविहारस्य | <b>गति बनाम सटीकता</b><br>क्लैब्यं मा स्म गमः         |
| <b>पक्षपात बनाम समानता</b><br>पण्डिताः समदर्शिनः              | <b>विकास बनाम पर्यावरण</b><br>भूमिरापोऽनलो वायुः       | <b>साध्य बनाम साधन</b><br>धूमेनाग्निरिवावृताः    | <b>बाहरी बनाम आंतरिक जवाबदेही</b><br>शौचम्, स्थैर्यम् |

चित्र 4.20: आठ प्रशासनिक दुविधाएँ — गीता का समाधान

इस तालिका का सबसे प्रभावी उपयोग यह है कि किसी भी वास्तविक प्रशासनिक स्थिति को इन आठ में से किसी एक दुविधा से जोड़ा जाए, और फिर उससे संबंधित श्लोक व उदाहरण के आधार पर समाधान खोजा जाए। इससे निर्णय सैद्धांतिक (श्लोक) और व्यावहारिक (उदाहरण) — दोनों स्तरों पर मज़बूत बनता है।

## 📖 कहानी: केस अध्ययन — "प्रसिद्ध डॉक्टर और कर-नियम": कर्तव्य बनाम उदारता

एक कर-अधिकारी के सामने शहर के सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित डॉक्टर — डॉ. एक्स — का मामला आता है। डॉक्टर ने अपने कर-विवरण में कुछ तकनीकी नियमों का पालन नहीं किया है। वे एक पिछड़े क्षेत्र में बड़ा अस्पताल खोलने की योजना बना रहे हैं, और कई लोग अधिकारी से कहते हैं — "इतने अच्छे इंसान को तकनीकी बातों पर परेशान मत कीजिए।"

**उदारता के पक्ष में तर्क:** कर-विभाग की छवि नागरिकों को परेशान करने वाली नहीं बनेगी; डॉक्टर अपने नेक पेशे पर ध्यान दे सकेंगे; अस्पताल की योजना पर असर नहीं पड़ेगा; और उपेक्षित क्षेत्र को चिकित्सा-सुविधा मिलेगी।

**नियम के पूर्ण पालन के पक्ष में तर्क:** (1) अधिकारी अपना व्यावसायिक कर्तव्य निभाएगा — **गीता सिखाती है कि अपना कर्तव्य निभाना ही सबसे बड़ा धर्म है**; जर्मन दार्शनिक कांट का निरपेक्ष आदेश (Categorical Imperative — बिना किसी शर्त के माना जाने वाला नैतिक नियम) कहता है कि जिस बात को सार्वभौमिक नियम नहीं बनाया जा सकता, वह नैतिक नहीं — तकनीकी नियमों का उल्लंघन सबके लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता, इसलिए यहाँ भी नहीं; और गांधीजी ने कहा था कि **"अच्छी तरह निभाया गया कर्तव्य अपने आप एक अधिकार पैदा करता है।"** (2) कर-संग्रह की प्रक्रिया की सत्यनिष्ठा बनी रहेगी। (3) निष्पक्षता और गैर-पक्षपात के मूल्य सुरक्षित रहेंगे — जनता को यह नहीं लगेगा कि शहर के प्रसिद्ध व्यक्ति को विशेष छूट मिली। (4) भ्रष्टाचार हमेशा छोटे और "भले" रूप में शुरू होता है, और फिर धीरे-धीरे बड़ा होता जाता है।

**संतुलित समाधान:** अधिकारी नियम का पूरी तरह पालन करेगा, पर अच्छे शासन की भावना में डॉ. एक्स और अन्य सभी नागरिकों के लिए कर-विवरण की प्रक्रिया को सरल और तेज़ बनाने के क़दम भी उठाएगा — जैसे सुविधा-केंद्र, स्पष्ट मार्गदर्शिका और समयबद्ध निपटारा।

🔑 **इस कहानी से सीख:** गीता का स्वधर्म (अपना कर्तव्य) किसी व्यक्ति की प्रसिद्धि या अच्छाई देखकर नहीं बदलता। नियम का समान पालन ही निष्पक्षता है; पर नियम का पालन करते हुए भी प्रक्रिया को नागरिक-अनुकूल बनाना करुणा है — यही कर्तव्य और करुणा का संतुलन है।

## 12. प्रमुख श्लोक और प्रशासनिक अनुप्रयोग

नीचे दी गई तालिका में गीता के कुछ अन्य महत्वपूर्ण श्लोकों को उनके प्रशासनिक अनुप्रयोग के साथ संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है — यह श्लोकों को उनके प्रशासनिक उपयोग के साथ याद रखने के लिए एक त्वरित संदर्भ (Quick Reference) की तरह उपयोगी है।

| श्लोक (अध्याय:श्लोक)                | अर्थ                                                                                       | प्रशासनिक उपयोग / उदाहरण                                                                                                                                                |
|-------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| वासांसि जीर्णानि (2:22)             | जैसे पुराने वस्त्र त्यागकर नए पहनते हैं, वैसे ही आत्मा पुराना शरीर त्यागती है।             | किसी अधिकारी को किसी विशेष विभाग/पोस्टिंग से भावनात्मक रूप से अत्यधिक जुड़ाव नहीं रखना चाहिए — नई भूमिका में भी उतनी ही तत्परता से ढल जाना चाहिए।                       |
| अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् (12:13-14)   | सभी प्राणियों से द्वेष-रहित, मित्रवत, दयालु, निरहंकारी और सुख-दुःख में समान रहने वाला।     | करुणा, क्षमाशीलता व स्थितप्रज्ञ जैसे गुणों का प्रतिबिंब — शांत व संयत नेतृत्व-शैली।                                                                                     |
| समः शत्रौ च मित्रे च (12:18-19)     | शत्रु-मित्र, सम्मान-अपमान, सदी-गर्मी, निंदा-प्रशंसा — सभी में समभाव रखने वाला।             | कर्तव्य के लिए कर्तव्य (Duty for duty's sake) — बिना किसी पक्षपात के, सबके प्रति समान व्यवहार।                                                                          |
| अहङ्कारं बलं दर्पम् (18:53)         | अहंकार, बल का दुरुपयोग, घमंड, अनुचित इच्छा व संग्रहवृत्ति — इनसे मुक्ति ही सच्चा त्याग है। | अनुपातहीन/असंगत संपत्ति (Disproportionate Assets) अर्जित करने की प्रवृत्ति व अधिकारियों में अहंकार — दोनों नैतिक व कानूनी रूप से दंडनीय माने जाते हैं।                  |
| निमित्तमात्रं भव (11:33)            | तुम केवल एक साधन/निमित्त मात्र हो, किसी बड़े उद्देश्य के लिए।                              | एक अधिकारी को स्वयं को राज्य/संविधान का एक 'साधन' (Instrument of State) समझना चाहिए, स्वयं को 'शासक' नहीं।                                                              |
| सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः (17:16) | विचारों की शांति, कोमलता, मौन और आत्म-संयम — यही मन की तपस्या है।                          | सादा जीवन, संयमित वाणी व आत्म-अनुशासन — जैसे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की सादगी-भरी जीवनशैली अक्सर उदाहरण के रूप में दी जाती है।                                         |
| अनित्यमसुखं लोकम् (9:33)            | यह संसार क्षणिक और दुःखमय है।                                                              | अधिकारी को भौतिक संपत्ति व भ्रष्टाचार के मोह से दूर रहने की प्रेरणा।                                                                                                    |
| विद्याविनयसम्पन्ने (5:18)           | विद्या-विनय संपन्न ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता — ज्ञानी इन सबमें समान दृष्टि रखता है।      | भाई-भतीजावाद व पक्षपात से दूरी — अनुच्छेद 14 (कानून के समक्ष समानता) से सीधा जुड़ाव (अध्याय 03 में निष्पक्षता के दार्शनिक आधार में भी इसी श्लोक का उल्लेख किया गया है)। |
| कामः क्रोधस्तथा लोभः (16:21)        | काम (वासना), क्रोध और लोभ — ये तीन नरक के द्वार हैं।                                       | भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग व लालच — प्रशासनिक पतन के तीन मुख्य कारण।                                                                                                 |

इस तालिका के हर श्लोक के साथ उसकी अध्याय:श्लोक संख्या दी गई है। इनमें से कुछ श्लोकों को उनके अर्थ और प्रशासनिक उपयोग के साथ अच्छी तरह आत्मसात कर लेना, गीता की व्यावहारिक समझ के लिए सबसे उपयोगी है।

## 12.1 समदर्शिता और आत्मौपम्य — निष्पक्षता और समानुभूति के दो सूत्र

“ ज्ञानी लोग विद्या और विनय से संपन्न ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चांडाल — सबमें समान दृष्टि रखते हैं। (विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥) ” — भगवद्गीता 5.18

**समदर्शिता (5.18)** का अर्थ है हर व्यक्ति में एक ही मानवीय गरिमा देखना — यही अनुच्छेद 14 की "विधि के समक्ष समता" का आध्यात्मिक आधार है। **आत्मौपम्य (6.32)** — "आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन" — का अर्थ है दूसरे के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख जैसा अनुभव करना, यानी **समानुभूति (Empathy)**। एक अधिकारी के लिए पहला सूत्र **निष्पक्षता** देता है और दूसरा **करुणा**; दोनों मिलकर ही न्यायपूर्ण और मानवीय प्रशासन बनाते हैं।

**युक्ताहार-विहार (6.16-17)** — **संतुलन का सिद्धांत**: "नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः" — योग न बहुत अधिक खाने वाले के लिए है, न बिल्कुल न खाने वाले के लिए; न बहुत सोने वाले के लिए, न बहुत जागने वाले के लिए। यह विचार यूनानी दार्शनिक अरस्तू (Aristotle) के **स्वर्णिम मध्य (Golden Mean)** से मेल खाता है, और आज के अधिकारी के लिए **कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance)** का सूत्र है।

## 13. दैवी संपदा (अध्याय 16) और ज्ञानवान के गुण (अध्याय 13)

### 13.1 दैवी संपदा — अध्याय 16, श्लोक 1-3 (26 गुण)

गीता के अध्याय 16 में कुल 26 दैवीय गुण बताए गए हैं, जो एक आदर्श व्यक्ति (और इसी भावना से, एक आदर्श प्रशासक) के लिए अनिवार्य माने गए हैं। नीचे इनमें से कुछ प्रमुख गुण दिए गए हैं:

| गुण (संस्कृत)    | हिंदी अर्थ          | प्रशासनिक महत्व                                                                    |
|------------------|---------------------|------------------------------------------------------------------------------------|
| अभयम् (Abhayam)  | निर्भयता            | राजनीतिक या अन्य किसी दबाव में भी अपने कर्तव्य-पथ से न डिगना।                      |
| दानम् (Danam)    | दान/उदारता          | करुणा-आधारित शासन (Compassionate Governance)।                                      |
| अहिंसा (Ahimsa)  | अहिंसा              | मानवीय पुलिसिंग (Humane Policing), हिरासत में यातना जैसी प्रवृत्तियों से दूरी।     |
| सत्यम् (Satyam)  | सत्य                | ईमानदार रिपोर्टिंग, आँकड़ों में हेर-फेर न करना।                                    |
| अक्रोध (Akrodha) | क्रोध-रहितता        | प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)।                        |
| शौचम् (Shaucham) | मन-शरीर की स्वच्छता | शासन में सदाचरिता (Probity in Governance)।                                         |
| क्षमा (Kshama)   | क्षमाशीलता          | आत्मसमर्पण सह पुनर्वास जैसी नीतियों (Surrender-cum-Rehabilitation Policy) का आधार। |
| तेजः (Tejah)     | ऊर्जा व तेज         | प्रशासनिक दक्षता व विश्वसनीयता।                                                    |
| धृतिः (Dhritih)  | धैर्य/दृढ़ता        | दीर्घकालिक शासन-चुनौतियों (Long-term Governance Challenges) का सामना करना।         |
| दया (Daya)       | दया-करुणा           | कल्याणकारी योजनाओं का संवेदनशील व प्रभावी क्रियान्वयन।                             |

### दैवी संपदा — आदर्श प्रशासक के प्रमुख गुण (अध्याय 16)



चित्र 4.21: दैवी संपदा — आदर्श प्रशासक के प्रमुख गुण (अध्याय 16)

### 13.2 ज्ञानवान के गुण — अध्याय 13, श्लोक 7-11

| गुण        | अर्थ                | प्रशासन में उपयोग                                          |
|------------|---------------------|------------------------------------------------------------|
| अमानित्वम् | विनम्रता (Humility) | डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का सादगी-भरा जीवन — राष्ट्रपति पद |

| गुण            | अर्थ                        | प्रशासन में उपयोग                                                                                                                                         |
|----------------|-----------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|                |                             | पर रहते हुए भी विनम्रता की मिसाल।                                                                                                                         |
| अदम्भित्वम्    | पाखंड-रहितता (No Hypocrisy) | विचार और आचरण में समन्वय — अध्याय 03 में केशव चंद्र सेन के उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि पाखंड का क्या परिणाम होता है।                                   |
| अहिंसा         | अहिंसा (Non-violence)       | पुलिस व्यवस्था में हिरासत-हिंसा (Custodial Violence) से दूरी।                                                                                             |
| क्षान्तिः      | क्षमा (Forgiveness)         | पुनर्वास कार्यक्रमों (Rehabilitation Programs) का नैतिक आधार।                                                                                             |
| आर्जवम्        | सरलता (Simplicity)          | त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री माणिक सरकार व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जैसे सार्वजनिक व्यक्तित्व अक्सर अपनी सादगी के लिए उद्धृत किए जाते हैं। |
| शौचम्          | मन-शरीर की शुद्धि           | व्यक्तिगत व व्यावसायिक सत्यनिष्ठा (Personal & Professional Integrity) — जिसका विस्तृत विवेचन अध्याय 03 में किया गया है।                                   |
| स्थैर्यम्      | दृढ़ता (Steadfastness)      | राजनीतिक व अन्य दबावों में भी न डिगना।                                                                                                                    |
| आत्म-विनिग्रहः | आत्म-संयम (Self-control)    | भ्रष्टाचार व प्रलोभनों से बचाव।                                                                                                                           |
| वैराग्यम्      | विरक्ति (Dispassion)        | पदस्थापन व सुविधाओं (Posting-Perks) के प्रति अनासक्ति।                                                                                                    |
| अनहंकारः       | अहंकार-रहितता (No Ego)      | "मैं शासक नहीं, सेवक हूँ" की भावना।                                                                                                                       |

**दैवी और आसुरी संपदा:** गीता के सोलहवें अध्याय में दैवी गुणों के साथ **आसुरी संपदा** भी बताई गई है — "दम्भो दपोंऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्॥" (16.4) — पाखंड, घमंड, अभिमान, क्रोध, कठोरता और अज्ञान। गीता के अनुसार दैवी संपदा मुक्ति की ओर ले जाती है और आसुरी संपदा बंधन की ओर। प्रशासनिक भाषा में, दैवी गुण **सुशासन** की नींव हैं और आसुरी गुण **कुशासन** और सत्ता के दुरुपयोग की जड़।

दैवी संपदा (26 गुण) और ज्ञानवान के गुण (20 गुण) — इन दोनों सूचियों में से जो गुण प्रशासनिक जीवन से सीधे जुड़ते हैं, वे सबसे महत्वपूर्ण हैं — जैसे **अभयम्** (निर्भयता), **सत्यम्** (सत्य), , **अनहंकारः** (अहंकार-रहितता) और **आत्म-विनिग्रहः** (आत्म-संयम)। ऊपर के उदाहरण इन्हीं गुणों को जीवंत रूप में दिखाते हैं।

## 14. भगवद्गीता और कांट (Kant) की नैतिकता — तुलना

भगवद्गीता और जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट — दोनों की नैतिक चिंतन-प्रणाली में कई रोचक समानताएँ व असमानताएँ देखने को मिलती हैं, जिनका तुलनात्मक अध्ययन दोनों को बेहतर समझने में मदद करता है।

| समानताएँ (Similarities)                                                                                                                | असमानताएँ (Differences)                                                                                                                                                  |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ◆ दोनों कर्तव्य-आधारित नैतिकता (Deontological Ethics) पर बल देते हैं — यानी कर्म का मूल्यांकन परिणाम से नहीं, कर्तव्य-पालन से होता है। | ◆ गीता एक धार्मिक महाकाव्य के संदर्भ में है, जबकि कांट का नीतिशास्त्र पूर्णतः धर्म-निरपेक्ष (Secular) तर्क पर आधारित है।                                                 |
| ◆ दोनों "कर्तव्य के लिए कर्तव्य" (Duty for duty's sake) के सिद्धांत का समर्थन करते हैं।                                                | ◆ गीता में नैतिकता का अंतिम आधार ईश्वर व आध्यात्मिकता है, जबकि कांट में यह विशुद्ध तर्क (Reason) व कर्तव्य-बोध है।                                                       |
| ◆ दोनों इंद्रियों और भावनाओं पर नियंत्रण को नैतिक जीवन के लिए आवश्यक मानते हैं।                                                        | ◆ गीता कर्म-सिद्धांत (Karma) के अनुसार कर्मफल की निश्चितता मानती है, जबकि कांट के यहाँ नैतिक कर्म के परिणाम की कोई गारंटी नहीं दी जाती।                                  |
| ◆ दोनों भौतिक सुखों से ऊपर आंतरिक/आध्यात्मिक मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं।                                                           | ◆ गीता संकट की घड़ी में लचीलापन देती है (आपद धर्म — खंड 8.3 देखें), जबकि कांट का 'कैटेगोरिकल इम्पेरैटिव' सिद्धांत तुलनात्मक रूप से अधिक कठोर व अपरिवर्तनीय माना जाता है। |
| ◆ दोनों संकल्प-स्वातंत्र्य (Freedom of Will) — यानी व्यक्ति की चुनाव करने की स्वतंत्रता — को स्वीकार करते हैं।                         |                                                                                                                                                                          |

ऊपर की तालिका से स्पष्ट है कि गीता और कांट के बीच कम-से-कम तीन बड़ी समानताएँ (कर्तव्य की सर्वोच्चता, परिणाम से स्वतंत्रता, नीयत की शुद्धता) और दो-तीन बड़ी असमानताएँ (नैतिकता का स्रोत, लचीलापन, अंतिम लक्ष्य) हैं। नीचे का चित्र इन्हें एक नज़र में दिखाता है।

## गीता बनाम कांट — एक नज़र में

| भगवद्गीता                   | बनाम    | कांट (Kant)                    |
|-----------------------------|---------|--------------------------------|
| कर्तव्य (धर्म) सर्वोपरि     | मूल     | कर्तव्य के लिए कर्तव्य         |
| फल की आसक्ति त्याज्य        | फल      | परिणाम नैतिकता की कसौटी नहीं   |
| स्वधर्म, ईश्वर-अर्पण        | स्रोत   | शुद्ध तर्क (Pure Reason)       |
| आपद धर्म — परिस्थिति अनुसार | लचीलापन | निरपेक्ष आदेश — कोई अपवाद नहीं |
| लोकसंग्रह और मोक्ष          | लक्ष्य  | स्वायत्त नैतिक इच्छा           |

चित्र 4.22: गीता बनाम कांट — एक नज़र में

### 14.1 गीता बनाम उपयोगितावाद और अरस्तू

| आधार             | भगवद्गीता                            | उपयोगितावाद (Utilitarianism)                                   | अरस्तू (Aristotle)              |
|------------------|--------------------------------------|----------------------------------------------------------------|---------------------------------|
| नैतिकता की कसौटी | कर्म की नीयत और कर्तव्य              | परिणाम — अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख                            | चरित्र और सद्गुण                |
| फल का स्थान      | फल की आसक्ति त्याज्य                 | फल (सुख) ही सब कुछ                                             | यूडेमोनिया (सार्थक जीवन) लक्ष्य |
| कल्याण का दायरा  | लोकसंग्रह — सर्वभूतहित (सबका कल्याण) | बहुसंख्यक का सुख                                               | नगर-राज्य का कल्याण             |
| संतुलन           | युक्ताहार-विहार, समत्व               | सुख-दुख का गणित (बेन्थम का 'सुख-कलन' — सुख-दुख को गिनकर तौलना) | स्वर्णिम मध्य (Golden Mean)     |

इस तुलना से स्पष्ट है कि गीता उपयोगितावाद की तरह जनकल्याण की बात तो करती है, पर उसका दायरा बहुमत तक सीमित न रहकर **सर्वभूतहित** (सभी प्राणियों के कल्याण) तक जाता है; और वह कांट की तरह कर्तव्य को सर्वोपरि रखते हुए भी अरस्तू की तरह **संतुलन और चरित्र** पर बल देती है। इसीलिए गीता को कर्तव्य-आधारित, सद्गुण-आधारित और कल्याण-आधारित — तीनों नैतिक परंपराओं का समन्वय कहा जा सकता है।

### 14.2 सुख का मार्ग — गीता और अन्य भारतीय परंपराएँ

**सुख (Happiness)** को "जीवन का समग्र रूप से व्यक्तिपरक आनंद" कहा गया है। इसके दो प्रकार माने जाते हैं — **सुखवादी सुख (Hedonic)**, जो उपयोगितावाद के संस्थापक ब्रिटिश विचारक जेरेमी बेन्थम के अनुसार अधिकतम आनंद पर केंद्रित है; और **यूडेमोनिक सुख (Eudaimonic)**, जो अरस्तू के अनुसार जीवन के अर्थ, उद्देश्य और व्यक्तिगत विकास पर केंद्रित है। गीता का मार्ग दूसरे प्रकार के अधिक निकट है। भारतीय परंपरा में सुख के अलग-अलग मार्ग बताए गए हैं:

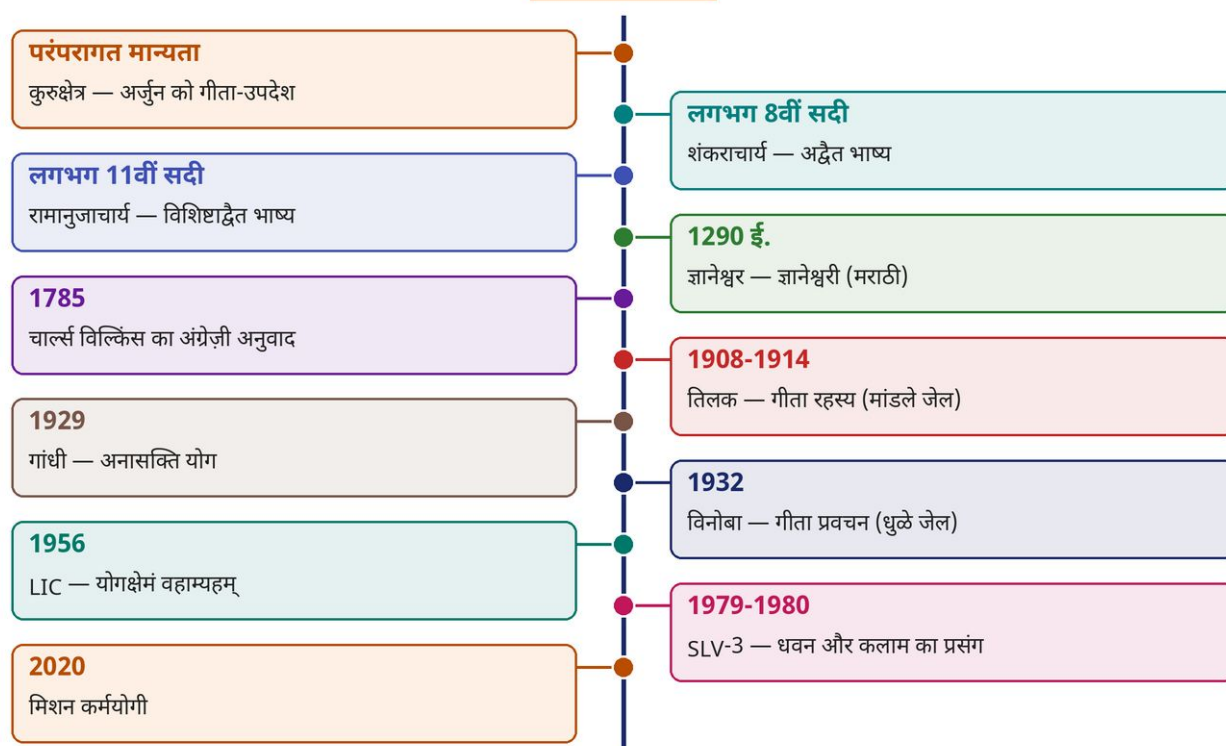
| परंपरा       | सुख का मार्ग                                                         |
|--------------|----------------------------------------------------------------------|
| बौद्ध धर्म   | मध्यम मार्ग — दोनों अतियों (भोग और कठोर तप) से बचना                  |
| भगवद्गीता    | आसक्ति के बिना निःस्वार्थ कर्म                                       |
| चार्वाक      | इंद्रिय-सुख को ही अंतिम लक्ष्य मानना (भारत का एकमात्र सुखवादी दर्शन) |
| भक्ति परंपरा | ईश्वर के प्रति समर्पण को सुख का मार्ग मानना                          |
| गुरु नानक    | संतोष और विनम्रता                                                    |
| उपनिषद्      | आनंद को आत्मा का स्वाभाविक स्वरूप मानना                              |

**प्रशासन में सुख:** आधुनिक जीवन में सुख की बाधाएँ बाहरी भी हैं (नकारात्मक सामाजिक तुलना, सामाजिक सहारे की कमी, आर्थिक तनाव, नशा) और भीतरी भी (आत्म-संदेह, वर्तमान में न जी पाना, अत्यधिक स्क्रीन-समय)। एक लोक सेवक जन-केंद्रित शासन, पारदर्शिता, मानसिक स्वास्थ्य की पहल (जैसे टेली-मानस — 2022 में शुरू हुई सरकार की निःशुल्क, चौबीसों घंटे चलने वाली मानसिक-स्वास्थ्य हेल्पलाइन), समावेशी नीतियों और नीति-निर्माण में "सुख" को एक लक्ष्य बनाकर (जैसे भूटान का सकल राष्ट्रीय सुख — GNH) नागरिकों के सुख को बढ़ा सकता है। गीता का निष्काम कर्म स्वयं अधिकारी के लिए भी तनाव-मुक्त, संतोषपूर्ण कार्य-जीवन का मार्ग है।

## 15. भगवद्गीता — ऐतिहासिक यात्रा और प्रशासनिक प्रासंगिकता

| वर्ष / संदर्भ                          | विषय / घटना / विचारक                                                                                                                                                                      |
|----------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| लगभग 3100 ईसा पूर्व (पारंपरिक मान्यता) | महाभारत युद्ध — कुरुक्षेत्र। अर्जुन की दुविधा से गीता के उपदेश का जन्म (गीता की ऐतिहासिक कालावधि को लेकर विद्वानों में अलग-अलग मत हैं)।                                                   |
| 8वीं शताब्दी ईसवी (लगभग)               | आदि शंकराचार्य — ज्ञान योग की व्याख्या, अद्वैत वेदांत के आधार पर।                                                                                                                         |
| 11वीं शताब्दी ईसवी (लगभग)              | रामानुजाचार्य — भक्ति योग की व्याख्या, विशिष्टाद्वैत के आधार पर।                                                                                                                          |
| 1856-1920                              | बाल गंगाधर तिलक — 'गीता रहस्य' (मांडले जेल, बर्मा, कारावास 1908-1914 के दौरान लिखी, प्रकाशन 1915)। कर्म योग की व्याख्या।                                                                  |
| 1869-1948                              | महात्मा गांधी — गीता को 'अनासक्ति योग' कहा। निष्काम कर्म को अपने जीवन का दैनिक मार्गदर्शक बनाया।                                                                                          |
| 1863-1902                              | स्वामी विवेकानंद — ज्ञान, कर्म व भक्ति योग की एकता का प्रतिपादन।                                                                                                                          |
| जुलाई 1945 (स्मृति: 1965)              | जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर — मैनहटन प्रोजेक्ट/ट्रिनिटी परीक्षण; गीता अध्याय 11, श्लोक 32 का उल्लेख — यह प्रसिद्ध उद्धरण उन्होंने वर्ष 1965 के एक साक्षात्कार में, घटना को याद करते हुए दिया था। |
| 1949-50                                | भारतीय संविधान — 26 नवंबर 1949 को अंगीकृत, 26 जनवरी 1950 से प्रभावी — धर्म, कर्म व समानता जैसे गीता के मूल्यों की झलक संवैधानिक भावना में।                                                |
| 1956 से                                | भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) की स्थापना (1956) — आदर्श वाक्य 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' गीता से लिया गया।                                                                                       |
| 2017                                   | ब्रिटेन में ऋषि सुनक — सांसद चुने जाने पर वेस्टमिंस्टर में भगवद्गीता पर हाथ रखकर शपथ ली (बाद में 2022 में वे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने)।                                                |
| 2017                                   | राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 — योग को स्वास्थ्य-नीति में स्थान।                                                                                                                          |
| 2020 से                                | मिशन कर्मयोगी (NPCSCB) — सितंबर 2020 में मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत — गीता के निष्काम कर्म व कर्तव्य-नीति से प्रेरित सिविल सेवा क्षमता-निर्माण पहल।                                        |

### भगवद्गीता — ऐतिहासिक यात्रा



चित्र 4.23: भगवद्गीता — ऐतिहासिक यात्रा

#### ☀ अध्याय का सार — एक पंक्ति में

भगवद्गीता एक धार्मिक ग्रंथ होते हुए भी, अपने मूल में एक धर्म-निरपेक्ष प्रशासनिक नियमावली की तरह पढ़ी जा सकती है — निष्काम कर्म हमें बिना फल की चिंता किए कर्तव्य निभाना सिखाता है, स्थितप्रज्ञ हमें संकट में भी स्थिर रहना सिखाता है, स्वधर्म हमें अपने पद की सीमाओं के भीतर ईमानदारी से काम करना सिखाता है, और लोकसंग्रह हमें याद दिलाता है कि एक नेता का आचरण ही पूरे समाज के लिए मार्गदर्शक बन जाता है — अर्जुन की दुविधा से लेकर आज के किसी प्रशासक की दुविधा तक, गीता का संदेश उतना ही प्रासंगिक बना हुआ है।

**बोनस: उत्तर-लेखन अभ्यास (मॉडल प्रश्न और उत्तर)**

**प्रश्न 1: "भगवद्गीता अर्जुन की दुविधा को संकट के सामने कैसे सुलझाती है? एक प्रशासक के रूप में आप प्रशासनिक दुविधा में गीता के सिद्धांत कैसे लागू करेंगे?"**

**उत्तर:** अर्जुन की दुविधा — धर्म की रक्षा बनाम परिवार की रक्षा — किसी भी प्रशासक की उस दुविधा जैसी है जब उसे किसी प्रभावशाली परिचित के खिलाफ ही कार्रवाई करनी पड़े।

◆ **गीता का समाधान:** कृष्ण अर्जुन को निष्काम कर्म (फल की चिंता छोड़कर कर्तव्य करो) और स्वधर्म (अपने नियत कर्तव्य का पालन करो, चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो) का उपदेश देते हैं।

◆ **प्रशासनिक अनुप्रयोग:** व्यक्तिगत संबंधों को कानून-पालन से ऊपर न रखना; स्थितप्रज्ञ भाव अपनाकर भावनात्मक दबाव में निर्णय न लेना; यह याद रखना कि सत्येन्द्र दुबे जैसे अधिकारियों ने भी अपने कर्तव्य-पथ पर अडिग रहकर मिसाल कायम की।

**निष्कर्ष:** गीता का संदेश है कि कर्तव्य-पालन में आने वाली पीड़ा अस्थायी है, पर कर्तव्य से विमुख होने का पश्चाताप स्थायी — यही भाव एक प्रशासक को अपनी हर दुविधा में मार्गदर्शन देता है।

**प्रश्न 2: "गीता के त्रिगुण सिद्धांत की व्याख्या करें। प्रशासक में किस गुण का विकास होना चाहिए और क्यों?"**

**उत्तर:** गीता के अनुसार सत्त्व (शुद्धता-ज्ञान), रजस (कार्य-आसक्ति) और तमस (अज्ञान-आलस्य) — ये तीन गुण हर व्यक्ति में अलग-अलग अनुपात में विद्यमान रहते हैं।

◆ **आदर्श संतुलन:** एक अच्छे प्रशासक को सत्त्वगुण (नैतिकता, सूचित निर्णय-क्षमता) को प्रमुखता देनी चाहिए, रजोगुण का उपयोग सकारात्मक दिशा (कार्य-कुशलता, त्वरित निर्णय) में करना चाहिए, और तमोगुण (निष्क्रियता, भ्रष्टाचार) का पूर्ण त्याग करना चाहिए।

**निष्कर्ष:** अंतिम लक्ष्य है 'गुणातीत' अवस्था — जहाँ प्रशासक सुख-दुःख व प्रशंसा-निंदा में समभाव रखते हुए, स्थितप्रज्ञ जैसी संतुलित मनःस्थिति से निर्णय ले सके।

